हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार 8 मार्च 2026

11 रतनगढ़ की मोनिका ने राष्ट्रीय स्तर पर जीता कांस्य पदक

12 महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना जरूरी

28 मार्च से होगी सरसों की सरकारी खरीद, 6200 रुपये प्रति क्विंटल का मिलेगा भाव

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

प्रदेश सरकार सरसों की सरकारी खरीद हैफेड व हरियाणा वेयर हाऊस के माध्यम से करेगी। फतेहाबाद की भट्टूकलां, भूना व फतेहाबाद अनाज मण्डी में 28 मार्च से सरसों की सरकारी खरीद शुरू हो जाएगी। हैफेड व वेयर हाऊस द्वारा सरसों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य 6200 रुपये प्रति क्विंटल की दर से खरीदेगी जोकि पिछले साल से 250 रुपये अधिक है। पिछले साल सरकार द्वारा 5950 रुपये प्रति क्विंटल की दर से सरसों की खरीद की गई थी। प्रदेश सरकार द्वारा सरसों की फसल को एमएसपी यानी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदने से किसानों को फायदा मिलेगा।

वैसे अब तक तो सरसों का मार्केट भाव एमएसपी के करीब है, लेकिन जब सरसों की फसल मार्केट में आएगी। उसके बाद मार्केट भाव कम होना शुरू हो जाता है। ऐसे में सरकार ने फतेहाबाद जिले में तीन अनाज मंडी सरसों की खरीद के लिए तय करते हुए मंडी के सचिवों को खरीद के लिए उचित व्यवस्था बनाने के निर्देश दिए। ये अनाज मंडी फतेहाबाद के साथ भट्टूकलां व भूना है। जिले में इस बार सरसों की करीब 22777 एकड़ में सरसों की खेती की गई थी। जिसमें से 8416 किसानों ने मेरी फसल-मेरा ब्यौरा पोर्टल पर सरसों की फसल का पंजीकरण करवाया। अब जिन किसानों ने पंजीकरण करवाया था, उन किसानों की फसल को ही एमएसपी पर खरीद होगी।

फतेहाबाद, भूना और भट्टू अनाज मण्डी में हैफेड और वेयर हाऊस करेंगे खरीद

दो वर्षों में सरसों की खरीद

अनाज मंडी	वर्ष 2025	वर्ष 2024
फतेहाबाद	30263	38302
भट्टूकलां	157826	75160
भूना	62520	31257
टोहाना	757	1649
कुल	251268	146234

वर्ष	एमएसपी
2015	3050
2023	5450
2024	5650
2025	5950
2026	6200

- इस बार सरसों की करीब 22777 एकड़ में सरसों की खेती की गई

8 वर्षों से हो रही सरसों की सरकारी खरीद

कृषि विभाग के अधिकारी बताते है कि जब से पिछले आठ वर्षों से सरसों की सरकारी खरीद चल रही है। इससे जिले में सरसों का रकबा बढ़ा है। एक बार जिले में सरसों का रकबा 20 हजार एकड़ से कम हो गया था, लेकिन पिछले साल यह बढ़कर 38 हजार एकड़ तक पहुंच गया। हालांकि इस साल सरसों के रकबे में कमी आई है। जिले में 21755 एकड़ में सरसों की बिजाई हुई है। किसान सरसों के खेत में अगेती कपास व नरमे की बिजाई करके अच्छा मुनाफा कमा सकता है।

दोगुना से अधिक हुआ एमएसपी

केंद्र सरकार ने सरसों का एमएसपी अब 6200 रुपये निर्धारित की हुई है। अब सरकार इस पर खरीद भी रही है। वर्ष 2015 में सरसों पर एमएसपी 3050 रुपये थी, लेकिन उस दौरान सरसों की सरकारी खरीद न होने के कारण किसान को मंडी में भाव 2500 रुपये तक ही मिलता था। लेकिन अब किसान को सरकारी खरीद होने पर पूरा भाव मिल रहा है। इससे किसानों को बड़े स्तर पर फायदा मिल रहा। सरसों की फसल प्रति एकड़ 8 से 10 क्विंटल होने पर किसान को प्रति एकड़ 50 से 60 हजार तक पैदा हो जाती है। विपणन सत्र 2026-27 के लिए सरकार ने सरसों का एमएसपी 250 बढ़ाकर 6,200 प्रति क्विंटल तय किया है। यह पिछले साल 5,950 प्रति क्विंटल था। कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि सरसों पर लागत लगभग 3,210 प्रति क्विंटल है, जिससे किसानों को लगभग 93 प्रतिशत का रिटर्न मिलेगा।

खबर संक्षेप

फसल को ट्रैक्टर से किया था नष्ट, आरोपी काबू

भट्टूकलां। खेत में खड़ी फसल को ट्रैक्टर व रोटावेटर चलाकर नष्ट करने के मामले में कार्रवाई करते हुए भट्टूकलां पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान प्रदीप पुत्र मनसुख निवासी प्रोफेसर कॉलोनी, फतेहाबाद के रूप में हुई है। थाना भट्टू कलां के प्रभारी उपनिरीक्षक राधे श्याम ने बताया कि इस संबंध में डॉ. जगतपाल निवासी भट्टू मंडी ने शिकायत दर्ज करवाई थी। डॉ. जगतपाल ने कहा कि वह अब जीवीएच नागपुर, जिला फतेहाबाद में कार्यरत हैं।

9.90 लाख की ठगी के मामले में डायरेक्टर पकड़ा

फतेहाबाद। विदेश भेजने के नाम पर ठगी करने वाले कबूतरबाजों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत सदर फतेहाबाद पुलिस ने सफलता मिली है। कनाडा भेजने के नाम पर 9.90 लाख की ठगी करने के मामले में पुलिस ने मोहाली स्थित एक एजुकेशन कंसल्टेंट फर्म के डायरेक्टर को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान करणदीप सिंह पुत्र अवतार सिंह निवासी मोहाली के रूप में हुई है। आर्थिक अपराध शाखा प्रभारी निरिक्षक सन्दीप ने बताया कि इस बारे पुलिस ने गांव मोहम्मदपुर रोही निवासी कुलदीप की शिकायत पर केस दर्ज किया था।

व्यापारी प्रतिनिधि सम्मेलन आज

सिरसा। हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल युवा इकाई के प्रधान हेमंत गुप्ता ने बताया कि 8 मार्च को सिरसा में व्यापारी प्रतिनिधि सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इस सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष व हरियाणा कान्फैड के पूर्व चेयरमैन बजरंग दास गर्ग होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता व्यापार मंडल के प्रदेश महासचिव व जिला प्रधान हीरालाल शर्मा करेंगे। व्यापारी सम्मेलन में व्यापार व उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए विचार-विमर्श किया जाएगा। उन्होंने कहा कि आज पूरे प्रदेश के व्यापारी व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष बजरंग गर्ग के नेतृत्व में एकजुट होकर कार्य कर रहे हैं और वे व्यापारियों के हितों के लिए पिछले 40 सालों से संघर्ष कर रहे हैं।

ड्यूटी पर तैनात मेडिकल ऑफिसर के साथ हुई मारपीट को लेकर प्रदर्शन

जाखल के सरकारी अस्पताल की ओपीडी सेवाएं बंद, मरीजों को नहीं मिला इलाज

हरिभूमि न्यूज ⏭ जाखल

जाखल के सीएचसी में शनिवार को ओपीडी सेवाएं पूरी तरह से बंद रही। इस दौरान मरीज इधर उधर भटकते नजर आए। डॉक्टरों द्वारा सेवाएं ठप करने का निर्णय करनाल जिले के घरौंडा में ड्यूटी पर तैनात एक मेडिकल ऑफिसर के साथ हुई मारपीट व अवैध हिरासत में हुई घटना को लेकर लिया गया है।

मामले में संबंधित पुलिस कर्मियों से जल्द से जल्द कार्रवाई की मांग

बता दें कि बीते 6 मार्च को एचसीएमएस की राज्य स्तरीय बैठक की गई थी। बैठक में प्रदेश के सभी जिलों के पदाधिकारियों से प्राप्त सुझाव ओर विचार विमर्श किया गया था। बैठक के दौरान फैसला लिया गया कि उक्त घटना को लेकर समय पर कोई कार्यवाही न होने पर प्रदेश भर में डॉक्टरों की सेवाएं दे रहे डॉक्टरों में भारी रोष व्याप्त है। इसे लेकर एसोसिएशन ने निर्णय लिया कि 7 मार्च को पूरे हरियाणा में सरकारी अस्पतालों की ओपीडी सेवा बन्द कर इसका विरोध जताया जाए। उन्होंने कहा कि इस वक्त पूरी एसोसिएशन पीड़ित डॉक्टर के साथ खड़ी है।

बैठक में कहा गया कि आगे की रणनीति का निर्णय राज्य कार्यकरणी की बैठक में लिया जाएगा। बैठक के दौरान सबसे अहम फैसला यह लिया गया कि विरोध के दौरान इमरजेंसी, लेबर रूम व पोस्टमार्टम की सेवाएं जारी रहेगी। बैठक के दौरान डॉक्टरों ने प्रशासन से मांग की है कि इस मामले में सबंधित एसएचओ व अन्य पुलिस कर्मियों के खिलाफ उचित कार्यवाही करते हुए जल्द से जल्द न्याय दिलाया जाए।

जाखल। सुनसान पड़ा जाखल सीएचसी। फोटो : हरिभूमि

मरीजों की नहीं काटी पर्ची

शनिवार को जाखल के सरकारी अस्पताल में अपना इलाज करवाने के लिए पहुंचे मरीजो ने बताया कि उन्हें सोमवार को आने के लिए कहा गया है। उन्होंने कहा कि आज उनकी पर्ची तक नही काटी गई। इस मामले में डॉक्टर कमलजीत ने कहा कि डॉक्टर के साथ हुए गलत व्यवहार को लेकर राज्य कमेटी के आह्वान पर यह फैसला लिया गया है। उन्होंने बताया कि एमरजेंसी सेवाओं को छोड़कर बाकी सभी सेवाएं बन्द कर दी गई है।

सिरसा। नागरिक अस्पताल में रोष जाहिर करते चिकित्सक। फोटो : हरिभूमि

सिरसा : मारपीट मामले में चिकित्सकों ने जताया रोष

सिरसा। करनाल के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घरौंडा में ऑन-ड्यूटी डॉक्टर डॉ. प्रशांत चौहान के साथ हुई मारपीट और दुव्र्यवहार की घटना के विरोध में शनिवार को सिरसा नागरिक अस्पताल में ओपीडी सेवाएं बंद रखकर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया गया। इस आंदोलन का नेतृत्व डॉ. जिला प्रधान आरके दहिया, राज्य कोषाध्यक्ष डॉ. विपुल गुप्ता तथा डॉ. प्रतीक गोयल ने किया। इस आंदोलन में जिला सिरसा के लगभग 130 डॉक्टरों ने भाग लिया और एकजुट होकर प्रशासन के खिलाफ अपना रोष प्रकट किया। डॉक्टरों ने एक स्वर में कहा कि ऑन-ड्यूटी डॉक्टर के साथ पुलिस द्वारा की गई इस तरह की घटना न केवल निंदनीय है बल्कि पूरी मेडिकल बिरादरी के सम्मान पर सीधा हमला है। केवल एसएचओ को सस्पेंड कर देना पर्याप्त नहीं है। एसोसिएशन की स्पष्ट मांग है कि संबंधित एसएचओ और उसके साथ शामिल चार अन्य पुलिस कर्मियों के खिलाफ संबंधित धाराओं में तुरंत एफआईआर दर्ज की जाए।

सिरसा। दोहरे हत्याकांड में संलिप्त आरोपी महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

खोखर दोहरे हत्याकांड में दो महिला आरोपी गिरफ्तार

- गत एक मार्च को खेतों में किया था हमला

हरिभूमि न्यूज ⏭ कालांवाली

पुलिस न गांव खोखर में हुए दोहरे हत्याकांड मामले में संलिप्त दो महिला आरोपियों को गिरफ्तार किया है। कालांवाली थाना प्रभारी सुनील कुमार ने शनिवार को बताया कि दोनों आरोपी महिलाओं को न्यायालय में पेश कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। थाना प्रभारी ने बताया कि गांव खोखर निवासी जसवीर सिंह ने पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई कि बीती एक मार्च को उसका भाई झरमल सिंह व उसका लड़का दलजीत सिंह अपने खेत की ओर गए थे, लेकिन काफी देर तक वापस नहीं आए तो उसने गुरप्रीत सिंह (चचेरा भाई) व भतीजे अर्शदीप सिंह के साथ उनकी तलाश शुरू की। तलाश करते हुए जब आरोपी मोती सिंह के खेत के पास पहुंचे तो जसवंत सिंह, बीकर सिंह व मोती सिंह कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ उसके भाई झरमल सिंह व लड़के दलजीत सिंह पर तेजधार हथियारों से मारपीट कर रहे थे। उन्होंने छुड़वाने का प्रयास किया तो आरोपियों ने उसके साथी गुरप्रीत सिंह व अर्शदीप सिंह को भी चोटें पहुंचाई।

जमीन को लेकर विवाद

शिकायतकर्ता जसवीर सिंह ने बताया कि तीन-चार दिन पहले उसने अपने भाई झरमल सिंह के साथ उत्तम सिंह निवासी खोखर की दो कनाल जमीन खरीदने का सौदा किया था। जमीन के सौदे के लिए हजार रुपये साई के तौर पर उत्तम सिंह को दिए थे, लेकिन बाद में यह सौदा कैंसिल हो गया और उसने वह राशि वापस कर दी। जिसकी वजह से उनकी आपसी रंजिश चल रही थी। इसी रंजिश के चलते आरोपियों ने सुनियोजित तरीके से इस वारदात को अंजाम दिया।

न्यायालय में पेश किया

थाना प्रभारी के अनुसार जांच के दौरान पुलिस ने पूछताछ की और महत्वपूर्ण सुराग जुटाए। ठोस साक्ष्यों के आधार पर पुलिस ने दो महिला आरोपियों की वारदात में संलिप्तता पाए जाने पर उन्हें गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

30 लाख की ठगी में दो गिरफ्तार

- नौकरी का झांसा देकर की थी धोखाधड़ी

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

झूठ बोलकर शादी करवाने व नौकरी लगवाने के नाम पर लाखो रूपये की ठगी करने के मामले में कार्रवाई करते हुए फतेहाबाद पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने एक शातिर अंतर्राज्यीय गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों की पहचान राम चंद्र निवासी देवगढ़, चुरू, राजस्थान और विनोद कुमार निवासी रूपाणा बिश्नोईयां, सिरसा के रूप में हुई है। शनिवार को इकोनॉमिक सेल प्रभारी निरीक्षक संदीप ने बताया कि इस बारे पुलिस ने गांव दौलतपुर निवासी रमेश कुमार की शिकायत पर केस दर्ज किया था। पुलिस को दी शिकायत में गांव दौलतपुर निवासी रमेश कुमार ने कहा था उसने अपने लडक़े मोहित का रिश्ता फरवरी 2023 में अंजू के साथ किया था। विनोद ने बताया कि अन्जु दिल्ली पुलिस में एसआई लगी हुई है। इस पर विश्वास करते हुए उसने अपने लड़के मोहित का रिश्ता अन्जु के साथ पक्का कर दिया। शादी के बाद अन्जु ने मोहित को दिल्ली पुलिस में नौकरी लगवाने की बात कही।

फतेहाबाद। शादी करवाने के नाम पर ठगी मामले में गिरफ्तार आरोपी।

मामला दर्ज

रमेश ने कहा कि इस पर उसने अन्जु को 30 लाख रुपये दे दिए लेकिन नौकरी न मिलने व कोई परीक्षा न होने पर पिता-पुत्र को अन्जू पर शक होने लगा। 29 अक्टूबर 2024 को राजस्थान में अन्जु के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज हुआ।

23 को निकलेगी नशे के खिलाफ यात्रा : भवानी

- महाराज रेस्टोरेंट रतिया में बैठक का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭ रतिया

अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के शहीदी दिवस के अवसर पर महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 23 मार्च को फतेहाबाद में नशा मुक्ति विशाल यात्रा का आयोजन किया जाएगा, जिसमें हजारों की संख्या में युवा और ग्रामीण शिरकत करेंगे। इसको लेकर आज महाराज रेस्टोरेंट रतिया में बैठक हुई। बैठक के दौरान ट्रस्ट के संस्थापक भवानी सिंह और शर्मा चंद लाली ने इस यात्रा की रूपरेखा साझा की। भवानी सिंह ने बताया कि हमारे शहीदों ने एक सशक्त और स्वस्थ भारत का सपना देखा था, लेकिन आज नशा हमारी युवा पीढ़ी को बर्बाद कर रहा है। इसी के विरोध में और शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि देने के लिए यह यात्रा आयोजित की जा रही है। यह विशाल यात्रा फतेहाबाद के मुख्य मार्गों से होते हुए समाज को नशे के खिलाफ एकजुट होने का संदेश देगी। बैठक में सतपाल जिन्दल, पारस सिंगला, नैब सिंह मंडेर, अजमेर सिंह, गुरप्रीप सिंह तूर, अभी नेहरा, पवन सिंगला, बलदेव कुमार, शिव वधवा, अजय कुमार, अमन वर्मा, गुरदीप अयालकी, अमृत सिंह बल आदि क्षेत्र के कई सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ताओं और किसान प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

रतिया। बैठक में भाग लेते महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

दिलाई जाएगी शपथ

शर्मा चंद लाली ने कहा कि शहीदी दिवस जोश और जज्बे का प्रतीक है। हम चाहते हैं कि युवा अपनी ऊर्जा नशे में बर्बाद करने के बजाय देश निर्माण में लगाएं। बैठक में निर्णय लिया गया यात्रा को सफल बनाने के लिए ट्रस्ट की टीमें हर गांव में जाकर युवाओं को इस मुहिम से जोड़ेंगी। यात्रा के समापन पर उपस्थित जनसमूह को नशा न करने और न करने देने की सामूहिक शपथ दिलाई जाएगी।

सोशल मीडिया पर अधिवक्ता के खिलाफ अभद्र टिप्पणी, दो गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने, किसी की पेशेवर भावनाओं को ठेस पहुंचाने और मानहानि करने वाले तत्वों के खिलाफ साइबर थाना पुलिस ने सख्त कार्रवाई की है। पुलिस ने एक अधिवक्ता की गरिमा को ठेस पहुंचाने और ऑनलाइन अपमानजनक टिप्पणी करने के मामले में भाजपा नेता सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। दोनों आरोपियों ने देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किए गए डॉ. ताज मोहम्मद का केस लड़ने वाले वकील के खिलाफ 7 महीने पहले सोशल मीडिया पर अभद्र बातें लिखी थी।

सात महीने पहले वकील के खिलाफ अभद्र बातें लिखी

एडवोकेट ने लगाए थे ये आरोप

एसपी को दी शिकायत में एडवोकेट विनय शर्मा ने आरोप लगाया था कि लायक राम गढ़वाल ने 20 मई 2025 को सोशल मीडिया पर पोस्ट डालकर कहा कि कांग्रेसी वकील देशद्रोही का केस लड़ रहा है। जब ऐतराज जताया तो भी लायक राम खिलाफ में लिखता रहा। विनय ने कहा कि जब 21 मई को उसने अपनी फेसबुक आईडी देखी तो एक पोस्ट धनंजय अग्रवाल की आईडी पर मिली, जिसमें मुश्ताक अहमद की फोटो के साथ लिखा गया कि इनका वकील कोई कांगी, वामी विचारधारा का व्यक्ति मिलेगा।

निर्माण | विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए मिलेगा बेहतर वातावरण

मुख्य अतिथियों को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया

1.25 करोड़ से बनेगी डिजिटल लाइब्रेरी, गोरखपुर परमाणु संयंत्र के सीएसआर प्रोजेक्ट के तहत रखी आधारशिला

हरिभूमि न्यूज ⏭ भूना

गोरखपुर परमाणु ऊर्जा परियोजना की सामाजिक सरोकार योजना के तहत शनिवार को हिसार रोड स्थित प्रजापति धर्मशाला के सामने आधुनिक डिजिटल लाइब्रेरी के निर्माण की आधारशिला रखी गई। करीब 1 करोड़ 25 लाख रुपए की लागत से बनने वाली इस लाइब्रेरी का शिलान्यास गोरखपुर परमाणु संयंत्र के निदेशक सत्यजीत रथ ने किया। कार्यक्रम में सीएसआर कमेटी के चेयरमैन अनिल कुमार विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर पालिका चेयरपर्सन अर्पणा पसरीजा ने की। इस अवसर पर चेयरपर्सन प्रतिनिधि मास्टर पंकज पसरीजा ने मुख्य अतिथियों को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया और भूना क्षेत्र में इस महत्वपूर्ण परियोजना के लिए गोरखपुर पावर प्लांट की सामाजिक सरोकार टीम का आभार व्यक्त किया। संयंत्र के निदेशक सत्यजीत रथ ने बताया कि भूना में युवाओं और विद्यार्थियों के लिए आधुनिक सुविधाओं से लैस डिजिटल लाइब्रेरी का निर्माण कराया जा रहा है, जिससे क्षेत्र के विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए बेहतर वातावरण मिलेगा।

भूना। डिजिटल लाइब्रेरी का शिलान्यास करते हुए परमाणु संयंत्र के निदेशक।

कमेटी का आभार व्यक्त किया

नगर पालिका चेयरपर्सन अर्पणा पसरीजा ने भूना में डिजिटल लाइब्रेरी और फुटबॉल एस्ट्रोटर्फ स्टेडियम की मंजूरी मिलने पर गोरखपुर परमाणु संयंत्र के निदेशक और सीएसआर कमेटी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने भविष्य में शहर में इनडोर स्टेडियम बनाने की मांग भी रखी, ताकि युवाओं को खेलों के लिए और बेहतर सुविधाएं मिल सकें।

शिक्षा क्षेत्र में सहायक

गोरखपुर पावर प्लांट की सामाजिक सरोकार परियोजना के चेयरमैन अनिल कुमार ने बताया कि बैजलपुर गांव में एक अत्याधुनिक एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम (मैदान) का निर्माण किया गया है, जिसका उद्घाटन अगस्त 2025 में हुआ। एनपीसीआईएल द्वारा 7.5 करोड़ की लागत से निर्मित, यह विश्व स्तरीय सुविधा ग्रामीण प्रतिभाओं को निखारने और जमीनी स्तर पर हॉकी को बढ़ावा देने के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक डिजिटल लाइब्रेरी आगे बढ़ाने में सहायक रहेगी।

30 से पहले समझ लें पैसे का खेल, वरना बाद में होगी मुश्किल!

कम उम्र में अपनाएं ये नियम, बनें आर्थिक रूप से मजबूत, निवेश की सही समय पर शुरुआत ही बनाती है अमीर

बिजनेस डेस्क

कम उम्र सपनों, करियर और नई शुरुआत का समय होती है। पहली नौकरी, पहली सैलरी और अपने फैसले लेने की आजादी — ये सब उत्साह से भरे होते हैं। लेकिन इसी दौर में पैसों को लेकर की गई छोटी-छोटी गलतियां आगे चलकर बड़ा वित्तीय बोझ बन सकती हैं। अक्सर युवा कमाई शुरू करते ही लाइफस्टाइल अपग्रेड कर लेते हैं, लेकिन बचत और निवेश को टालते रहते हैं। नतीजा यह होता है कि 30 की उम्र पार करते-करते जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, मगर मजबूत फाइनेंशियल बेस नहीं बन पाता। अगर आप 30 की उम्र से पहले कुछ बुनियादी और असरदार वित्तीय नियम समझ लें, तो भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित और तनावमुक्त बनाया जा सकता है। आइए जानते हैं ऐसे 5 जरूरी फाइनेंस रूल्स, जिन्हें हर युवा को अपनाना चाहिए।

1. 50/30/20 रूल: कमाई का सही बंटवारा

यह नियम बजट बनाने का सबसे आसान और कारगर तरीका माना जाता है। इसके अनुसार 50% आय जरूरी खर्चों पर (किराया, राशन, बिजली-पानी, बिल, ईएमआई), 30% आय इच्छाओं पर (घूमना-फिरना, मूवी, शॉपिंग, गैजेट्स) और 20% आय बचत या निवेश में लगानी चाहिए। अगर शुरुआत से ही इस फॉर्मूले को अपनाया जाए, तो खर्च नियंत्रण में रहता है और निवेश की आदत भी बनती है। कई युवा पूरी सैलरी खर्च कर देते हैं और महीने के अंत में बचत शून्य रह जाती है। 50/30/20 रूल आपको अनुशासन सिखाता है और "पहले बचत, फिर खर्च" की सोच विकसित करता है।

2. 20/4/10 कार रूल: गाड़ी का सपना

नई कार खरीदना लगभग हर युवा का सपना होता है। लेकिन कार लोन अक्सर लंबे समय तक वित्तीय दबाव बना देता है। ऐसे में 20/4/10 रूल बहुत काम आता है। कम से कम 20% डाउन पेमेंट करें, लोन की अवधि 4 साल से ज्यादा न रखें। आपकी मासिक आय का 10% से ज्यादा ईएमआई और कार खर्च पर न जाएं। इस नियम का मकसद यह है कि गाड़ी आपके लिए सुविधा बने, बोझ नहीं। लंबी अवधि का लोन लेने से ब्याज ज्यादा चुकाना पड़ता है और अन्य निवेश के अवसर छूट सकते हैं।

3. रूल ऑफ 72: कंपाउंडिंग की ताकत समझें

निवेश की दुनिया में "कंपाउंडिंग" सबसे बड़ा हथियार है। रूल ऑफ 72 आपको यह समझने में मदद करता है कि आपका पैसा कितने समय में दोगुना होगा। फॉर्मूला है: 72 ÷ ब्याज दर = पैसा डबल होने का समय (सालों में)। उदाहरण के लिए, अगर आपको 12% सालाना रिटर्न मिल रहा है तो 72 ÷ 12 = 6 साल यानी आपका निवेश लगभग 6 साल में दोगुना हो सकता है। यह नियम आपको जल्दी निवेश शुरू करने की प्रेरणा देता है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, कंपाउंडिंग का फायदा उतना ज्यादा मिलेगा।

4. 3–6 महीने का इमरजेंसी फंड : सुरक्षा कवच

जिंदगी अनिश्चितताओं से भरी है। अचानक नौकरी छूट जाए, मेडिकल इमरजेंसी आ जाए या कोई पारिवारिक संकट आ जाए। ऐसे समय में कर्ज लेने की नौबत न आए, इसके लिए इमरजेंसी फंड जरूरी है। आपको कम से कम 3 से 6 महीने के खर्च के बराबर रकम अलग से बचाकर रखनी चाहिए। यह रकम सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड जैसे सुरक्षित और आसानी से निकाले जा सकने वाले साधनों में होनी चाहिए। इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और निवेश को बीच में तोड़ने से बचाता है।

5. रूल ऑफ 100: उम्र के अनुसार निवेश

निवेश में रिस्क और रिटर्न का संतुलन बेहद जरूरी है। रूल ऑफ 100 एक आसान फॉर्मूला देता है। 100 – आपकी उम्र = इक्विटी में निवेश का प्रतिशत। अगर आपकी उम्र 25 साल है। 100–25 = 75 यानी 75% निवेश शेयर बाजार या इक्विटी में और 25% सुरक्षित साधनों (**FD**, बॉन्ड आदि) में रखा जा सकता है। यह नियम युवाओं को ज्यादा जोखिम लेने की अनुमति देता है, क्योंकि उनके पास समय ज्यादा होता है और बाजार की गिरावट से उबरने का मौका भी।

क्यों जरूरी हैं ये फाइनेंस रूल्स?

- ये आपको खर्च और बचत का संतुलन सिखाते हैं
- कर्ज के जाल से बचाते हैं
- निवेश की आदत जल्दी डालते हैं
- भविष्य के बड़े लक्ष्यों (घर, शादी, रिटायरमेंट) के लिए तैयारी करवाते हैं
- आर्थिक तनाव कम करते हैं
- 30 की उम्र के बाद जिम्मेदारियां तेजी से बढ़ती हैं परिवार, बच्चों की पढ़ाई, घर का लोन, मेडिकल जरूरतें। अगर आपने 20s में मजबूत वित्तीय नींव रख ली, तो आगे का सफर आसान हो जाएगा।

आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर महिलाएं निवेश के फैसलों में बढ़ रही भागीदारी

अब 56% अब खुद ले रहीं फैसले फाइनेंशियल प्लानिंग में गैप

निवेश में महिलाओं का आत्मविश्वास और योजना बनाने में चुनौती बढ़ा

देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया, सर्वे में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया

बिजनेस डेस्क

भारत में महिलाओं की आर्थिक भूमिका तेजी से बदल रही है। अब महिलाएं केवल कमाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि निवेश से जुड़े फैसलों में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। शहरी भारत में निवेश को लेकर महिलाओं का आत्मविश्वास लगातार बढ़ रहा है और बड़ी संख्या में महिलाएं अब अपने निवेश निर्णय खुद लेने लगी हैं। हालांकि निवेश में बढ़ती भागीदारी के बावजूद मजबूत और व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। यह तस्वीर रिपोर्ट में सामने आई है। जिसे यूजीओवी के साथ मिलकर तैयार किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक महिलाओं में निवेश के प्रति जागरूकता और स्वतंत्रता दोनों तेजी से बढ़ रही हैं, लेकिन वित्तीय लक्ष्य तय करने और दीर्घकालिक योजना बनाने में अभी भी सुधार की काफी गुंजाइश है। इस अध्ययन के लिए 2025 की चौथी तिमाही में देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया। सर्वे में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया, जो अपने परिवार के निवेश संबंधी फैसलों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अध्ययन में पुरुषों और महिलाओं की संख्या बराबर रखी गई और इसका फोकस मुख्य रूप से शहरी और अपेक्षाकृत उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग के परिवारों पर रहा।

अब महिलाएं खुद ले रही निवेश के फैसले

रिपोर्ट की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि निवेश के फैसलों में महिलाओं की स्वतंत्र भागीदारी तेजी से बढ़ी है। सर्वे के मुताबिक अब 56 फीसदी महिलाएं निवेश से जुड़े फैसले खुद ले रही हैं, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 44 फीसदी था। यानी तीन साल में इसमें 12 फीसदी की उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। वहीं, पुरुषों में यह आंकड़ा 68 फीसदी है, जो अब भी महिलाओं से अधिक है। लेकिन महिलाओं में तेजी से बढ़ती भागीदारी यह संकेत देती है कि आने वाले समय में यह अंतर और कम हो सकता है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि निवेश के बारे में खुद सीखने वाली महिलाओं की संख्या भी बढ़ रही है। अब करीब 16 फीसदी महिला निवेशकों ने कहा कि उन्होंने निवेश की जानकारी स्वयं हासिल की है, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 13 फीसदी था। इसके विपरीत संयुक्त रूप से निवेश निर्णय लेने वाली महिलाओं का हिस्सा 52 फीसदी से घटकर 43 फीसदी रह गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएं अब आर्थिक मामलों में ज्यादा आत्मनिर्भर हो रही हैं।

मार्केट-लिंक्ड प्रोडक्ट्स में बढ़ी दिलचस्पी

महिलाएं अब पारंपरिक निवेश विकल्पों के साथ-साथ बाजार से जुड़े निवेश उत्पादों में भी सक्रिय हो रही हैं। सर्वे के मुताबिक करीब 51 फीसदी महिलाएं अब म्यूचुअल फंड और शेयरों में स्वतंत्र रूप से निवेश कर रही हैं, जबकि तीन साल पहले यह आंकड़ा 39 फीसदी था। यह बदलाव इस बात का संकेत है कि महिलाओं में जोखिम लेने की क्षमता और निवेश की समझ दोनों बढ़ रही हैं।

आत्मविश्वास ऊंचा, लेकिन फाइनेंशियल प्लानिंग कमजोर

रिपोर्ट का एक अहम निष्कर्ष यह भी है कि निवेशकों में आत्मविश्वास तो बढ़ा है, लेकिन व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। सर्वे के मुताबिक 84 फीसदी लोगों को भरोसा है कि वे निवेश के फैसले खुद लेने में सक्षम हैं। लेकिन सिर्फ 33 फीसदी निवेशकों के पास ही स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य और उन्हें हासिल करने की ठोस योजना मौजूद है।

यह भी जानें

- 32 फीसदी लोगों के पास योजना तो है, लेकिन कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं है।
- 29 फीसदी लोगों ने लक्ष्य तय किए हैं, लेकिन उन्हें हासिल करने की ठोस रणनीति नहीं है।
- 6 फीसदी के पास न लक्ष्य है और न ही कोई योजना।
- 25 से 34 वर्ष की युवा महिलाओं में ज्यादा दिखाई देता है। इस आयु वर्ग की कई महिलाएं निवेश की योजना तो बनाती हैं, लेकिन उनके लक्ष्य स्पष्ट नहीं होते।

पैसे के मायने भी बदल रहे

अध्ययन दिखाता है कि शहरी भारत में पैसे को लेकर लोगों की सोच तेजी से बदल रही है। पहले जहां पैसे को मुख्य रूप से जरूरत या जीविका से जोड़ा जाता था, वहीं इसे आजादी और बेहतर जीवनशैली से जोड़ा जाने लगा है। 2022 में जहां 27 फीसदी लोग पैसे को 'आजादी' से जोड़ते थे, वहीं अब यह आंकड़ा बढ़कर 35 फीसदी हो गया है। इसके विपरीत पैसे को केवल 'जरूरत' से जोड़ने वालों की संख्या घट गई है।

घर से ज्यादा अनुभवों पर खर्च

निवेश व्यवहार में एक दिलचस्प बदलाव यह भी देखने को मिला है कि लोग पारंपरिक संपत्तियों के बजाय अनुभवों को अधिक महत्व देने लगे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक 41 फीसदी महिलाएं घर खरीदने की बजाय यात्रा को प्राथमिकता दे रही हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 34 फीसदी है। 2025 में करीब 43 फीसदी लोगों ने अतिरिक्त पैसे का इस्तेमाल यात्रा पर किया, जबकि 2022 में यह हिस्सा 36 फीसदी था। वहीं, घर खरीदने को सबसे बड़ा सपना मानने वालों का प्रतिशत 36 फीसदी से घटकर 28 फीसदी रह गया है।

सलाहकारों पर भरोसा लेकिन उपयोग सीमित

- 39 फीसदी लोग वित्तीय जानकारी किसी अनजान व्यक्ति से साझा करने में असहज महसूस करते हैं।
- 35 फीसदी का मानना है कि उन्हें अन्य स्रोतों से ही पर्याप्त जानकारी मिल जाती है।
- 32 फीसदी किसी की सलाह मानने में सहज नहीं होते।
- निवेश के मामलों में परिवार और दोस्तों की भूमिका सबसे अहम बनी हुई है। 76 फीसदी निवेश संबंधी सलाह अपने सामाजिक दायरे से लेते हैं।
- निवेश से जुड़े फैसलों में सोशल मीडिया की भूमिका भी तेजी से बढ़ रही है।
- शेयर बाजार में निवेश करने वाली महिलाओं में 51 फीसदी सोशल मीडिया पर स्टॉक से जुड़े कंटेंट पर सक्रिय रूप से पोस्ट या टिप्पणी करती हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 36 फीसदी है।

पैसे को सही दिशा देना बेहद जरूरी

बिजनेस डेस्क। आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियां बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड? : इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : किनके लिए सही?

- अगर आप: सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, ईएमआई या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपकी नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड : परिवार वालों के लिए जरूरी

- यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करें: घर का किराया या ईएमआई, स्कूल फीस, राशन और घरेलू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड : अस्थिर आय वालों के लिए

अगर आप : फ्रीलांसर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनियमित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च 60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देगा।

कितना कम या ज्यादा है सही? : बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश ग्रोथ धीमी हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें?

1. सेविंग अकाउंट

सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।

2. शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)

कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।

3. स्वीप-इन एफडी

एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि स्वत: एफडी में चली जाती है। जरूरत पर ऑटोमैटिक ब्रेक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है।

इमरजेंसी फंड कैसे बनाएं?

- हर महीने सैलरी का 10–20% अलग रखें।
- बोनस या अतिरिक्त आय का हिस्सा जोड़ें।
- खर्चों की समीक्षा कर गैर-जरूरी खर्च कम करें।
- लक्ष्य तय करें और ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट करें।

अगर आदत जल्दी बनती है तो जोखिम भी रहता है सीमित

सिर्फ 1000 रुपये की एसआईपी से करोड़पति बन सकती है जेन जेड, रिटायरमेंट तक तैयार हो सकता है बड़ा फंड

समय जितना ज्यादा कंपाउंडिंग का असर उतना बड़ा होगा

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

आज की युवा पीढ़ी यानी जेन जेड कमाई के साथ-साथ निवेश को लेकर भी पहले से ज्यादा जागरूक हो रही है। 1997 से 2012 के बीच जन्मी यह पीढ़ी टेक्नोलॉजी-फ्रेंडली है और डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए निवेश करना पसंद करती है, लेकिन बड़ा सवाल यह है क्या सच में सिर्फ 1000 रुपये की एसआईपी से करोड़पति बना जा सकता है? जवाब है हां, अगर शुरुआत जल्दी हो और निवेश लंबी अवधि तक जारी रहे।

क्या है एसआईपी और क्यों खास?

एसआईपी यानी सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान। यह तरीका आपको हर महीने एक तय राशि निवेश करने की सुविधा देता है। एसआईपी के जरिए निवेश मुख्य रूप से म्यूचुअल फंड में किया जाता है, जिसका प्रदर्शन शेयर बाजार पर निर्भर करता है। एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत है कंपाउंडिंग-यानी आपके निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे रिटर्न कमाता है। यही चक्र समय के साथ बड़े फंड में बदल जाता है। मान लीजिए आपकी उम्र 20 साल है और आप हर महीने 1000 रुपये की एसआईपी शुरू करते हैं। आप यह निवेश 60 साल की उम्र तक यानी 40 साल तक जारी रखते हैं। यदि सालाना 12% अनुमानित रिटर्न मिले।

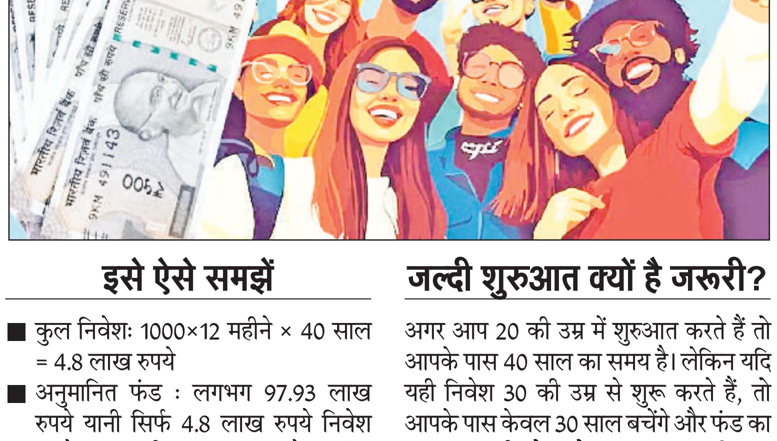

इसे ऐसे समझें

- कुल निवेश: 1000×12 महीने × 40 साल = 4.8 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : लगभग 97.93 लाख रुपये यानी सिर्फ 4.8 लाख रुपये निवेश करके आप करीब 98 लाख रुपये का फंड बना सकते हैं।
- यदि सालाना 15% अनुमानित रिटर्न मिले
- कुल निवेश : 4.8 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : लगभग 2.30 करोड़ रुपये
- यहां साफ दिखता है कि रिटर्न में सिर्फ 3% का अंतर भी लंबे समय में कितना बड़ा बदलाव ला सकता है। यही है कंपाउंडिंग की असली ताकत।

जल्दी शुरुआत क्यों है जरूरी?

अगर आप 20 की उम्र में शुरुआत करते हैं तो आपके पास 40 साल का समय है। लेकिन यदि यही निवेश 30 की उम्र से शुरू करते हैं, तो आपके पास केवल 30 साल बचेंगे और फंड का आकार काफी छोटा हो जाएगा। समय जितना ज्यादा, कंपाउंडिंग का असर उतना बड़ा।

बाजार जोखिम समझना जरूरी

- एसआईपी पूरी तरह शेयर बाजार से जुड़ी होती है। ऐसे में जरूरी बातें समझना जरूरी है।
- रिटर्न कभी भी फिक्स नहीं होता।
- बाजार में तेजी होगी तो ज्यादा रिटर्न मिलेगा।
- गिरावट के समय पोर्टफोलियो में अस्थायी नुकसान हो सकता है।
- लंबी अवधि में जोखिम कम हो जाता है।
- इतिहास बताता है कि लंबी अवधि में इक्विटी बाजार ने बेहतर रिटर्न दिया है, लेकिन धैर्य बनाए रखना जरूरी है।

टॉप 5 फंड्स का 5 साल का एनुअल रिटर्न 19 से 20% तक रहा

टैक्स का भी रखें ध्यान

एसआईपी से मिलने वाला मुनाफा पूरी तरह टैक्स-फ्री नहीं होता। इक्विटी फंड में एक साल से ज्यादा निवेश रखने पर लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन्स टैक्स लागू होता है (निर्धारित सीमा से ऊपर के लाभ पर)। इसलिए रिटायरमेंट प्लानिंग करते समय टैक्स की गणना भी शामिल करें।

खास सलाह

- लंबा निवेश समय
- डिजिटल प्लेटफॉर्म तक आसान पहुंच
- रिस्क लेने की क्षमता
- अगर आप अभी से 1000 रुपये की एसआईपी शुरू करते हैं और हर साल अपनी आय बढ़ने पर एसआईपी की रकम भी बढ़ाते हैं (स्टेप अप एसआईपी), तो फंड का आकार कई गुना हो सकता है।

निवेश शुरू करने से पहले रखें इन बातों का ध्यान

- इमरजेंसी फंड जरूर बनाएं
- हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस लें।
- अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार फंड चुनें।
- निवेश लंबी अवधि के लिए रखें, बीच में बंद न करें।
- बाजार गिरने पर घबराकर एसआईपी बंद न करें।

क्या 1000 रुपये काफी

शुरुआत के लिए 1000 रुपये बिल्कुल पर्याप्त है। असली बात रकम नहीं, अनुशासन और निरंतरता है। समय के साथ आप एसआईपी बढ़ा सकते हैं। छोटी रकम से शुरुआत करने का फायदा यह है कि आदत जल्दी बनती है और जोखिम सीमित रहता है। जेन जेड के लिए यह सुनहरा मौका है। 20 की उम्र में शुरू की गई 1000 रुपये की एसआईपी 60 की उम्र तक करोड़ों का फंड बना सकती है। बशर्ते निवेश लंबी अवधि तक जारी रहे और अनुशासन बना रहे। याद रखिए, अमीर बनने के लिए बड़ी सैलरी नहीं, बल्कि जल्दी शुरुआत, धैर्य और कंपाउंडिंग की समझ जरूरी है। अगर आज कदम उठाएंगे, तो रिटायरमेंट के समय आपके पास भारी-भरकम फंड हो सकता है। अब सवाल यह है कि आप अपनी पहली एसआईपी कब शुरू कर रहे हैं?

सैलरी और जरूरतों को समझें कितना इमरजेंसी फंड है जरूरी

तैयारी

बिजनेस डेस्क

आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियां बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड?

इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : किनके लिए सही?

- अगर आप: सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, ईएमआई या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपकी नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड परिवार वालों के लिए जरूरी

- यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। मान लीजिए आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करें: घर का किराया या ईएमआई, बच्चों की स्कूल फीस, राशन और घरेलू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड अस्थिर आय वालों के लिए

- अगर आप : फ्रीलांसर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं
- तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनियमित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च 60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। यह आपको लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देगा।

कितना कम या ज्यादा है सही?

- बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश ग्रोथ धीमी हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें?

1. सेविंग अकाउंट
   सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।
2. शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)
   कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।
3. स्वीप-इन एफडी
   यह एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि स्वतः एफडी में चली जाती है। जरूरत पड़ने पर ऑटोमैटिक ब्रेक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है। ध्यान रखें, इमरजेंसी फंड को शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड या लंबी अवधि के निवेश साधनों में न रखें, क्योंकि बाजार गिरावट के समय आपको नुकसान में पैसा निकालना पड़ सकता है।

इमरजेंसी फंड कैसे बनाएं?

- हर महीने सैलरी का 10–20% अलग रखें
- बोनस या अतिरिक्त आय का हिस्सा जोड़ें
- खर्चों की समीक्षा कर गैर-जरूरी खर्च कम करें

लक्ष्य तय करें व ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट करें

- धीरे-धीरे 6–12 महीनों में आपका फंड तैयार हो सकता है।

जीवन की पहली सुरक्षा परत

- इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन की पहली सुरक्षा परत है। निवेश से पहले इसे प्राथमिकता देना चाहिए। आपकी सैलरी, नौकरी की स्थिरता और पारिवारिक जिम्मेदारियां तय करती हैं कि आपको 3, 6 या 12 महीने का फंड रखना चाहिए।
- सही योजना के साथ बनाया गया इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और किसी भी आर्थिक संकट में मजबूती से खड़ा रखता है। याद रखें सुरक्षा पहले, निवेश बाद में।

खबर संक्षेप

सेवादारों ने की श्री कृष्ण गोशाला में सेवा

फतेहाबाद। श्री शिव भोले नंदी शाला के सेवादारों ने आज टीम के प्रधान दीपू सिंगला की अगुवाई में श्री कृष्ण गोशाला में हरा चारा काटने की सेवा की। दीपू सिंगला ने बताया दुघस्त्र जैसे ही उन्हें पता चला की श्री कृष्णा गोशाला में लेबर की कमी है तो वो अपनी पूरी टीम के साथ श्री कृष्ण गौशाला में पहुंचे और यहां आ कर हरे चारे को काटने की सेवा की।

बैग चोरी के मामले में आरोपी को किया गिरफ्तार

फतेहाबाद। दुकान के बाहर से बैग चोरी के एक मामले में कार्रवाई करते हुए थाना शहर फतेहाबाद पुलिस ने एक आरोपी को काबू किया है। आरोपी की पहचान विशाल उर्फ टोनी पुत्र दीनानाथ निवासी अप्पू नगर, थाना रोड फतेहाबाद के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 27 हजार रुपये की नगदी बरामद की है।

बलजिंद्र सिंह को दी श्रद्धांजलि

ओढां। श्री गुरुद्वारा साहिब ओढ़ा में नंबरदार स्व. बलजिंद्र सिंह कुंडर की अंतिम अरदास पर श्री अखंड पाठ का भोग डाला गया। गुरुद्वारा साहिब के मुख्य हेडग्रंथी अमृतपाल सिंह ने शब्द कीर्तन का गायन करते हुए कहा कि इस नश्वर संसार से जाना हम सबने है लेकिन कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते है जिनकी पूर्ति नही हो सकती। उन्होंने परिवार के लिए आकाल पुरूख का भाना मानने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। अंतिम अरदास में काफी संख्या में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक हस्तियों व अधिकारियों ने भाग लिया।

धूमधाम से मनाया लाइनमैन दिवस

सिरसा। बिजली कर्मचारियों ने शनिवार को लाइनमैन दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर अधिकारियों द्वारा लाइनमैनों के कठिन परिश्रम, समर्पण औश्र विद्युत व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने में उनके महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की गई। सभी ने एक दूसरे को लाइनमैन दिवस की बधाई दी।

जरूरतमंदों को वितरित किया राशन

सिरसा। जनकल्याण न्यास ने 227वां मासिक राशन वितरण कार्यक्रम में 110 जरूरतमंदों को राशन वितरित किया। एक विद्यार्थी को 2 हजार रुपए का आर्थिक सहयोग भी दिया गया। न्यास के प्रधान ओम बहल ने बताया कि न्यास द्वारा हर माह जरूरतमंदों को राशन वितरित किया जाता हो। कार्यक्रम में महेश सिंगला, सुभाष बांसल, राजू शर्मा, गौरव परूथी, रवि अरोड़ा आदि का योगदान रहा।

जानलेवा हमले के मामले में छठा आरोपी दबोचा

फतेहाबाद। रतिया पुलिस ने जुलाई 2025 में हुए एक हमले और एससी/एसटी एक्ट के मामले में छठे आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान आकाश उर्फ काशी पुत्र रामचंद्र, निवासी बलियाला के रूप में हुई है। थाना शहर रतिया प्रभारी निरीक्षक पुष्पा ने बताया कि पीड़ित प्रगट सिंह ने शिकायत दर्ज करवाई थी कि जब वह बस अड्डा रतिया पर मौजूद था, तब कुछ युवकों ने उसे गालियां दीं।

हॉकी प्रतियोगिता में किया शानदार प्रदर्शन

रत्तनगढ़ की मोनिका ने राष्ट्रीय स्तर पर जीता कांस्य पदक

'बेस्ट अटैकर' का पुरस्कार किया हासिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रतिया

गांव रतनगढ़ के राजकीय माध्यमिक विद्यालय की चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी मोनिका ने सर्विस खेलों की हॉकी प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर कांस्य पदक जीतकर विद्यालय और क्षेत्र का नाम रोशन किया है। यह प्रतियोगिता नई दिल्ली में आयोजित की गई थी, जिसमें देशभर से आई टीमों ने भाग लिया। मोनिका ने पूरे टूर्नामेंट के दौरान बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया। उनके शानदार प्रदर्शन को देखते हुए उन्हें टूर्नामेंट में 'बेस्ट अटैकर' के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। उनकी इस उपलब्धि पर विद्यालय परिवार में खुशी और गर्व का माहौल है।

इस अवसर पर विद्यालय में एक सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें विद्यालय की मुखिया अनीता रानी ने मोनिका को सम्मानित करते हुए कहा कि मोनिका की यह उपलब्धि पूरे विद्यालय के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि कड़ी मेहनत, लगन और अनुशासन से ही ऐसे मुकाम हासिल किए जा सकते हैं और मोनिका ने यह साबित कर दिया है कि मेहनत करने वालों के लिए कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता। राजकीय प्राथमिक विद्यालय रत्तनगढ़ के मुखिया राजेश पंवार ने कहा कि मोनिका ने राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतकर न केवल विद्यालय बल्कि पूरे क्षेत्र का मान बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि उनकी यह सफलता अन्य खिलाडियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनेगी और युवा पीढ़ी को खेलों के प्रति आगे बढन्ने के लिए प्रोत्साहित करेगी। इस अवसर पर स्टाफ सदस्य हरी सिंह, सुदेश कुमार नापा, तनु तनेजा, विपिन कुमार, सोनिया, आशीष कुमार, हरप्रीत सिंह, गौरव चोपड़ा, हरदीश कुमार तथा रूप राजिंदर कौर सहित अन्य शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

रतिया। छात्रा मोनिका को सम्मानित करते स्टाफ सदस्य। फोटो : हरिभूमि

द्रोणाचार्य बॉक्सिंग क्लब के मुक्केबाज कजाकिस्तान में ले रहे हैं स्पेशल ट्रेनिंग

फतेहाबाद। द्रोणाचार्य बॉक्सिंग क्लब, फतेहाबाद के मुक्केबाजों का हाई लेवल की ट्रेनिंग के लिए कजाकिस्तान में आयोजित स्पेशल प्रैक्टिस कैम्प में भाग लेने गए हैं। कोच प्रदीप कुमार ने बताया कि जेएसडब्ल्यू द्वारा द्रोणाचार्य बॉक्सिंग क्लब से चयनित बॉक्सर रितेश, विनीत और ट्विंकल को 25 फरवरी से 10 मार्च तक कजाकिस्तान में स्पैशल प्रैक्टिस के लिए भेजा गया है। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा बेस्ट मुक्केबाजों का चयन कर समय-समय पर इस प्रकार के इंटरनेशनल कैम्प और इंटरनेशनल मैच के लिए भेजा जाता है। जिससे खिलाड़ियों को उच्च स्तर की ट्रेनिंग कराई जाती है। ऐसे कैम्पों से बॉक्सिंग गेम की बारीकियों को सीखने का और सुधारने का मौका मिलता है , ताकि आने वाली अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेकर और मेडल प्राप्त कर देश का नाम रोशन कर सके। कोच प्रदीप कुमार ने बताया कि इंटरनेशनल कोच डा. राजीव गोदारा, अर्जुन अवॉर्डी व ऑलम्पियन जय भगवान की देख रेख में फतेहाबाद के एमएम कॉलेज में स्थापित द्रोणाचार्य बॉक्सिंग क्लब सालों से अच्छे बॉक्सर तैयार कर रहे है। क्लब ने हर्ष गिल, अनुपमा, हिम्मत सिंह, हर्ष गहलोत, हर्ष शर्मा, तनीषा लांबा, माही सिवाच, अमनदीप, पायल जाखड़ , अर्पित, रितेश, सुखरीत जैसे कई अंतरराष्ट्रीय बॉक्सर निकाले हैं, तथा इसी क्लब के बच्चे हरियाणा पुलिस, रेलवे तथा आर्मी मे गवर्नमेंट जॉब में कार्यगर्त हैं।

ब्यूटी पार्लर से चोरी करने पर युवक गिरफ्तार, नकदी बरामद

थाना रोड स्थित रामस्वरूप पकौड़े वाली गली का मामला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

थाना रोड स्थित रामस्वरूप पकौड़े वाली गली में स्थित एक ब्यूटी पार्लर से नकदी चोरी करने के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना शहर फतेहाबाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान विक्की उर्फ कापा पुत्र मदनलाल निवासी कबीर बस्ती, फतेहाबाद के रूप में हुई है। आरोपी के कब्जे से 20 हजार रुपये की नगदी बरामद की गई है। थाना प्रभारी निरीक्षक सुरेंद्रा ने बताया कि इस बारे पुलिस ने ममता रानी पत्नी सुरेंद्र कुमार निवासी रामस्वरूप पकौड़े वाली गली, फतेहाबाद की शिकायत पर केस दर्ज किया था। ममता ने अपनी शिकायत में बताया कि उसने अपने मकान के सामने खुशी ब्यूटी पार्लर के नाम से दुकान कर रखी है। 5 मार्च को वह रोजाना की तरह शाम के समय दुकान को ताला लगाकर घर चली गई थी। अगले दिन सुबह लगभग 6 बजे जब वह दुकान पर पहुंची तो देखा कि दुकान का ताला टूटा हुआ था। अंदर जाकर जांच करने पर पाया कि दुकान में रखे फूलदान में रखे 31 हजार 400 रुपये गायब थे, जिन्हें किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा रात के समय चोरी कर लिया गया था। शिकायत के आधार पर थाना शहर फतेहाबाद में मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। जांच के दौरान पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए आरोपी की पहचान विक्की के रूप में करते हुए उसे गिरफ्तार कर लिया है।

फतेहाबाद। चोरी के आरोप में गिरफ्तार युवक।

सरकार के सुशासन के दावे झूठेः मोहित शर्मा

सिरसा। प्रदेश युवा कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष मोहित शर्मा ने कहा कि मौजूदा समय में भ्रष्टाचार चरम पर पहुंच चुका है और प्रशासनिक व्यवस्थाओं में अव्यवस्था का बोलबाला है। महंगाई, बेरोजगारी और बढ़ते अपराधों के कारण आम जनता का जीवन कठिन हो गया है। मोहित ने जारी बयान में कहा कि भाजपा सरकार जनता से किए गए वादों को पूरा करने में पूरी तरह असफल रही है। भाजपा के कार्यकाल में लगातार महंगाई बढ़ती जा रही है, जिससे आम आदमी की जेब पर भारी बोझ पड़ रहा है। रोजमर्रा की जरूरत की वस्तुओं के दाम बढन्ने से मध्यम वर्ग और गरीब वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हो रहा है।

फतेहाबाद। शनिदेव मंदिर में हवन करते मंडल सदस्य। फोटो : हरिभूमि

श्री बालाजी हनुमान सेवा मंडल ने मनाया श्री शनिदेव जन्मोत्सव व वार्षिक उत्सव

फतेहाबाद। श्री बालाजी हनुमान सेवा मंडल फतेहाबाद द्वारा 16वां श्री शनिदेव जन्मोत्सव व वार्षिक उत्सव प्रातः हवन यज्ञ के साथ शुरू हुआ। इस अवसर पर मंदिर के प्रधान प्रदीप बंसल उर्फ सोनू, कोषाध्यक्ष शंकर बंसल, पूर्णचंद सिंगला, दयानन्द गर्ग, प्रवीन जैन, अनिल गुप्ता, विनोद गर्ग उर्फ नानू, संजय बंसल, राजेश गर्ग सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे। प्रधान प्रदीप बंसल ने बताया कि भगवान शनिदेव जी को कष्टों को हरने वाला देव कहा जाता है और यह हर्ष का विषय है कि इस बार श्री शनिदेव का जन्मोत्सव शनिवार ही आया है। यह अपने आप में हर्ष की बात है। प्रधान ने बताया कि सांय 7 बजे वार्षिक उत्सव के तहत श्री शनिदेव की विशेष आरती की गई व केक काटा गया।

नेशनल फार्मेसी एजुकेशन डे पर हुई रंगोली प्रतियोगिता

फार्मेसी के विद्यार्थीयों ने हिस्सा लिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

स्थानीय लॉर्ड शिवा कॉलेज ऑफ फार्मेसी में नेशनल फार्मेसी एजुकेशन डे पर रंगोली प्रतियोगिता हुई जिसमें संस्थान के फार्मेसी के विद्यार्थीयों ने हिस्सा लिया। संस्थान के प्राचार्य प्रो. जितेंद्र सिंह ने बताया कि फादर ऑफ फार्मास्यूटिकल एजुकेशन इन इंडिया प्रो. एम.एल. शराफ की 124वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य पर यह रंगोली प्रतियोगिता करवाई गई है। प्रतियोगिता में बी.फार्मेसी पांचवे सेमेस्टर की तानिया, महक, हरपिंद्र कौर व सोनिया ने फार्मेसी प्रोफेशन पर बहुत खूबसूरत रंगोली बनाकर प्रथम स्थान पाया। संस्थान के महानिदेशक देशकमल बिश्नोई, महासचिव एडवोकेट सोमप्रकाश बिश्नोई ने विजेता टीम को 500 रुपये के नगद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर बिश्नोई ने कहा कि प्रो. एम.एल. शराफ ने फार्मास्यूटिकल प्रोफेशन को आगे ले जाने के लिए अपना तन-मन-धन सब न्यौछावर कर दिया था। इस वसर पर संस्था के वाइस प्रिंसिपल डॉ. जगतार सिंह चौहान, डॉ. प्रीति, सुधांशु पांडे, गजल धमीजा, आरती नरूला, हरविंद्र कौर, शुभम सचदेवा, मनोज, दीक्षा कटारिया, दीक्षा, जतिनप्रीत कौर, पिंकी, भूपेंद्र, डिंपल, सुनीता, सुरेंद्र, शालू, अमनदीप इत्यादि सभी शिक्षक व गैर शिक्षक सदस्य भी मौजूद थे।

सिरसा। रंगोली बनाते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

आगजनी से पीड़ित दुकानदार से मिला व्यापार मंडल का प्रतिनिधिमंडल

नुकसान का आंकलन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

शहर के सुभाष चौक के निकट स्थित मोहित बूट हाऊस पर विगत रात्रि को हुई आगजनी की घटना को लेकर व्यापार मंडल के जिला प्रधान हीरालाल शर्मा, महासचिव सुरेश गोयल, व्यापार मंडल के शहरी प्रधान कीर्ति गर्ग व युवा प्रधान हेमंत गुप्ता सहित व्यापार मंडल के सदस्य दुकान के संचालक मोहित तनेजा से मिले। उन्होंने दुकान संचालक मोहित तनेजा से घटना संबंधी पूरी जानकारी ली और नुकसान का आंकलन भी किया। दुकान संचालक के मुताबिक इस घटना में उसे लाखों रुपए का नुकसान हुआ है। उन्होंने दुकान संचालक को ढांढस बंधाते हुए कहा कि व्यापार मंडल इस विपदा की घड़ी में उसके साथ है। घटना में हुए नुकसान को लेकर जल्द ही व्यापार मंडल का प्रतिनिधिमंडल जिला प्रशासन से मिलेगा और व्यापारी को हुए नुकसान का मुआवजा दिलवाने का प्रयास करेगा। जिला व्यापार मंडल के प्रधान हीरालाल शर्मा ने बताया कि वर्तमान सरकार द्वारा घोषणा की गई थी कि आगजनी में अगर किसी व्यापारी को नुकसान होता है तो सरकार की और से उसे उचित मुआवजा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि दुकान संचालक के आर्थिक हालात ठीक नहीं है और घर के गुजारे के लिए दुकान ही एकमात्र सहारा थी, लेकिन इस घटना के बाद उसके परिवार का भरण पोषण का भी संकट खड़ा हो गया है। इसलिए प्रशासन व सरकार से मांग है कि जल्द से जल्द पीड़ित व्यापारी को मुआवजा उपलब्ध करवाया जाए, ताकि वह फिर से अपना रोजगार शुरू कर सके।

सिरसा। पीड़ित दुकानदार से मिलते व्यापारी नेता। फोटो : हरिभूमि

सरकार ने देश के हितों को अमेरिका के सामने रखा गिरवी : सैलजा

सिरसा। सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि हाल ही में सामने आई खबरें बेहद चिंताजनक हैं, जिनमें कहा जा रहा है कि भारत को रूस से तेल खरीदने के लिए अमेरिका से 30 दिनों की अनुमति मिली है। उन्होंने कहा कि यह स्वाभाविक सवाल उठता है कि आखिर अमेरिका कौन होता है भारत को अनुमति देने वाला। उन्होंने कहा कि भारत एक स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र है और उसके आर्थिक तथा विदेश नीति से जुड़े निर्णय देश के राष्ट्रीय हितों के आधार पर होने चाहिए, किसी दूसरे देश की मंजूरी पर नहीं। कुमारी सैलजा ने आरोप लगाया कि मोदी सरकार की विदेश नीति से देश की गरिमा और स्वायत्तता कमजोर होती दिखाई दे रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार ने देश के हितों को अमेरिका के सामने गिरवी रख दिया है। भारत की ऊर्जा जरूरतों और रणनीतिक फैसलों का निर्णय वॉशिंगटन में नहीं बल्कि नई दिल्ली में होना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री और उनकी सरकार को देश के सामने स्पष्ट करना चाहिए कि आखिर उन्हें ऐसा क्या डर है कि वे हर अंतरराष्ट्रीय मुद्दे पर अमेरिका की बात मानने को तैयार दिखाई देते हैं। भारत की विदेश नीति हमेशा स्वतंत्र और संतुलित रही है, लेकिन वर्तमान सरकार के रवैये से यह धारणा बन रही है कि देश की नीतियों पर बाहरी दबाव हावी हो रहा है। कुमारी सैलजा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी का हमेशा से मानना रहा है कि भारत की विदेश नीति स्वतंत्र, संतुलित और पूरी तरह राष्ट्रीय हितों पर आधारित होनी चाहिए। देश की ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक हित किसी भी अंतरराष्ट्रीय दबाव से ऊपर होने चाहिए।

वंचित आवेदनकर्ता किसानों की राशि वापस करे विभागः लखविंद्र

गांव झोरड़ रोही के किसानों की बैठक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

गांव झोरड़ रोही के किसानों की बैठक हुई जिसमें सोलर वॉटर पंपिंग सिस्टम के लिए जमा करवाई गई राशि सोलर कनेक्शन न मिलने वाले किसानों को तुरंत वापस करने के लिए अतिरिक्त उपायुक्त को मांग पत्र भेजा गया। बीकेई प्रधान लखविंद्र सिंह ने बताया कि सोलर वॉटर पंपिंग सिस्टम आवेदनकर्ता किसानों को जिनका वर्क आर्डर में नाम नहीं है और किसानों ने जमा राशि वापस लेने के लिए आवेदन भी दिया है, उन्हें विभाग पेमेंट वापसी के लिए बार-बार चक्कर कटवा रहा है। उन्होंने बताया कि हरियाणा में 27973 किसानों ने सोलर लगवाने के लिए आवेदन किया था, जिसमें से 8050 किसानों को सोलर वॉटर पंपिंग सिस्टम लगाने का वर्क आर्डर जारी हुआ है, बाकी 19923 किसानों की लगभग 170 करोड़ जमा राशि तीन महीनों से सरकार के पास पड़ी है, जिसका किसानों को वापसी भुगतान नहीं किया जा रहा है। किसानों को सोलर कनैक्शन भी नहीं मिला और वह अपनी जमा राशि वापस लेने के लिए बार-बार विभाग के चक्कर काट रहे हैं। उन्होंने अतिरिक्त उपायुक्त से मांग पत्र के माध्यम से सोलर कनैक्शन से वंचित सभी किसानों को पेमेंट जल्द से जल्द जारी करने की अपील की और जब भी वर्ष 2026 में पीएम कुसुम योजना के तहत सोलर कनैक्शन की नई स्कीम आए, उसमें दिसंबर 2025 के आवेदन कर्ता किसानों को प्राथमिकता दी जाए। इस मौके पर नत्था सिंह, नछत्तर सिंह, दर्शन सिंह, संदीप सिंह आदि मौजूद रहे।

सिरसा। बैठक करते किसान।

गुरुद्वारा की खिड़की तोड़कर दानपात्र चोरी करने के मामले में आरोपी काबू

सिरसा। पुलिस ने गांव लकडावाली में गुरुद्वारा में घुसकर दान पात्र चोरी करने के मामले में एक और आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। बड़ागुढ़ा थाना प्रभारी इंस्पेक्टर राजेश कुमार ने बताया कि गुरूदवारा सिंह सभा लकडावाली के प्रधान मलकीत सिंह ने बताया कि ग्रंथी हिम्मत सिंह पाठ कर देर सायं गुरुद्वारा साहिब के मुख्य गेट को ताला लगाकर घर चले गए थे । रात को अज्ञात युवक गुरुद्वारा साहिब की खिडकी पर लगी जाली तोडकर अंदर दाखिल हुए और वहां रखा दान पात्र उठा ले गए। दान पात्र में करीब 7 हजार रुपये नकदी थी। शिकायत के आधार पर बड़ागुढा थाना में चोरी का मामला दर्ज कर जांच शुरु की गई थी। जांच के दौरान पुलिस ने महत्वपूर्ण सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपी भागदीप सिंह को गिरफ्तार कर लिया है। गौरतलब है कि इस मामले में संलिप्त एक आरोपी को पुलिस ने पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। गिरफ्तार किए गए पहले आरोपी की निशानदेही पर दानपात्र बरामद कर लिया गया था।

सिरसा। दानपात्र चोरी मामले में पकड़ा गया आरोपी।

अवैध पिस्तौल के मामले में दूसरे आरोपी को काबू कर जेल भेजा

फतेहाबाद। अवैध हथियार बरामदगी के एक मामले में कार्रवाई करते हुए थाना भट्टू कलां पुलिस ने दूसरे आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। थाना प्रभारी उपनिरीक्षक राधे श्याम ने बताया कि इस बारे पुलिस ने 15 जुलाई 2025 को आम्र्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया था। इस मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने आरोपी सिकंदर पुत्र संतलाल निवासी निवासी नायक मोहल्ला, भट्टूकलां को काबू कर लिया है। आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से न्यायालय के आदेशानुसार उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। उन्होंने बताया कि इस मामले में इससे पहले पुलिस द्वारा मुख्य आरोपी राजू उर्फ बाबा पुत्र सीमा महंत निवासी काबरेल, जिला हिसार, हाल किरायेदार नायक मोहल्ला, भट्टू मंडी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से एक अवैध पिस्तौल 315 बोर बरामद किया गया था। प्रारंभिक जांच के अनुसार पुलिस टीम को गश्त के दौरान भट्टू मंडी रेलवे फाटक के पास मुखबिर खास से सूचना प्राप्त हुई थी कि उक्त आरोपी अवैध पिस्तौल लेकर भट्टू से सुलीखेड़ा रोड की तरफ जा रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने तत्परता से कार्रवाई करते हुए सरकारी कॉलेज के पास सडक पर पैदल जा रहे संदिग्ध व्यक्ति को काबू किया। तलाशी लेने पर उसके कब्जे से एक अवैध पिस्तौल 315 बोर बरामद हुआ था।

योजना | विशेष ऋण योजना : स्वरोजगार के लिए आगे आएं महिलाएं

3 लाख रुपये तक ऋण दे रहा महिला विकास निगम

- योजना विधवा और तलाकशुदा महिलाओं के लिए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

हरियाणा महिला विकास निगम द्वारा विधवा एवं तलाकशुदा महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से एक विशेष ऋण योजना शुरू की गई है। इस योजना के तहत महिलाओं को अपना स्वरोजगार स्थापित करने के लिए बैंकों के माध्यम से अधिकतम 3 लाख रुपये तक का ऋण उपलब्ध करवाया जाएगा।

डीसी डॉ. विवेक भारती ने बताया कि जिला फतेहाबाद के लिए इस योजना के अंतर्गत 40 मामलों का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने कहा कि यह योजना उन विधवा और तलाकशुदा महिलाओं के लिए है जिनकी वार्षिक पारिवारिक आय 3 लाख रुपये तक है तथा उनकी आयु 18 वर्ष से 60 वर्ष के बीच है। डीसी ने बताया कि इस योजना के अंतर्गत कुल परियोजना लागत का 10 प्रतिशत भाग संबंधित महिला को स्वयं वहन करना होगा, जबकि शेष 90 प्रतिशत राशि बैंकों के माध्यम से ऋण के रूप में उपलब्ध करवाई जाएगी। उन्होंने बताया कि बैंक द्वारा लिए जाने वाले ब्याज की प्रतिपूर्ति हरियाणा महिला विकास निगम द्वारा अनुदान के रूप में की जाएगी। यह अनुदान अधिकतम 50 हजार रुपये तक तथा अधिकतम 3 वर्ष की अवधि तक, जो भी पहले हो, प्रदान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत महिलाएं विभिन्न प्रकार के स्वरोजगार कार्य शुरू कर सकती हैं। इनमें बुटीक, मनियारी की दुकान, कपड़ा कार्य, सिलाई-कढ़ाई, ई-रिक्शा संचालन, मसाला एवं आचार निर्माण, खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां, कैरी बैग निर्माण, बेकरी, रेडीमेड गारमेंट्स निर्माण सहित अन्य छोटे एवं लघु उद्योग शामिल हैं। इसके अतिरिक्त महिलाएं अपनी रुचि एवं क्षमता के अनुसार अन्य कोई भी व्यवसाय शुरू करने के लिए भी इस योजना का लाभ उठा सकती हैं।

फतेहाबाद। डीसी डॉ. विवेक भारती।

व्यवसाय को स्थापित करने में सहायता

डीसी डॉ. विवेक भारती ने बताया कि महिलाओं को अपने व्यवसाय को सफलतापूर्वक स्थापित करने में सहायता प्रदान करने के लिए ऋण स्वीकृत होने से पहले आवश्यक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। इससे महिलाओं को अपने कार्य के प्रति आवश्यक कौशल और व्यावहारिक जानकारी प्राप्त होगी तथा उन्हें कारोबार संचालित करने में किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा।

लोक अदालत की आड़ में साइबर ठगी से सावधान रहें : गायत्री

फतेहाबाद। जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण अध्यक्ष दीपक अग्रवाल के आदेशानुसार 14 मार्च को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। इस राष्ट्रीय लोक अदालत के आयोजन को देखते हुए साइबर अपराधी भी सक्रिय हो गए हैं और लोक अदालत के नाम पर लोगों को ठगने का प्रयास कर रहे हैं। सीजेएम एवं जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण सचिव गायत्री ने बताया कि साइबर ठग लोगों को ई-मेल, एसएमएस और व्हाट्सएप के माध्यम से फर्जी लिंक भेजते हैं, जो देखने में सरकारी या आधिकारिक प्रतीत होते हैं। इन लिंक के जरिए अपराधी लोगों की बैंक डिटेल, पासवर्ड और ओटीपी जैसी संवेदनशील जानकारी प्राप्त कर ठगी करने की कोशिश करते हैं। उन्होंने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि किसी भी संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करें और अपनी व्यक्तिगत या बैंकिंग जानकारी किसी के साथ साझा न करें। यदि गलती से कोई लिंक क्लिक हो जाए या कोई व्यक्ति साइबर ठगी का शिकार हो जाए, तो तुरंत नजदीकी थाने में सूचना दें या साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करें। इसके अलावा जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के हेल्पलाइन नंबर 01667-231174 पर भी जानकारी दी जा सकती है।

खबर संक्षेप

आम नागरिकों के लिए आईटीआई पोर्टल

सिरसा। हरियाणा सरकार ने राज्य के आम नागरिकों के कौशल विकास और संसाधनों तक पहुंच बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। बजट 2025-26 की घोषणाओं के अनुरूप, सरकार ने ऑनलाइन पोर्टल लॉन्च किया है, जिसके माध्यम से अब आम नागरिक सरकारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों की सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे। आईटीआई प्रधानाचार्य राकेश शर्मा ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य आईटीआई के संसाधनों का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करना और स्थानीय नागरिकों को तकनीकी रूप से सशक्त बनाना है। उन्होंने बताया कि अब आम नागरिक पोर्टल पर पंजीकरण करने के बाद आईटीआई में बनी लाइब्रेरी व वर्कशॉप मशीनों का उपयोग कर सकेंगे।

दुर्घटना करने के मामले में आरोपी चालक काबू

फतेहाबाद। फरवरी माह में हुई एक सडक़ दुर्घटना के मामले में कार्रवाई करते हुए भूना पुलिस ने आरोपी चालक को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान जसबीर राम पुत्र श्रेण राम, निवासी अहरवां के रूप में हुई है। थाना प्रभारी ओमप्रकाश ने बताया कि धमीजा कॉलोनी, भूना निवासी गुरताज सिंह मान ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि 27 फरवरी को वह अपनी कार में सवार होकर भूना से रतिया जा रहा था। जब वह दिगोह बस अड्डे के पास पहुंचा, तो अचानक गांव दिगोह की तरफ से एक होंडा सिटी कार के चालक ने तेज रफ्तारी और लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए उसकी कार में ड्राइवर साइड में जोरदार टक्कर मार दी।

पर्स छीनने के मामले में दो युवकों को पकड़ा

फतेहाबाद। पर्स छीनने के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना शहर फतेहाबाद पुलिस ने दो युवकों को गिरफ्तार किया है। काबू किए गए आरोपियों की पहचान देवीलाल उर्फ गोलू पुत्र धर्मचंद तथा राजकुमार उर्फ कालू पुत्र महेंद्र सिंह निवासी मताना के रूप में हुई है। थाना शहर फतेहाबाद प्रभारी निरीक्षक सुरेंद्रा ने बताया कि इस संबंध में प्रेम कुमार पुत्र राजदेव निवासी स्वामी नगर फतेहाबाद ने पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायत में बताया कि 5 सितंबर 2025 को वह अपनी लडक़ी के साथ भट्टू रोड स्थित कन्हैया डेयरी के पास से अपने घर की ओर आ रहे थे।

महिला पर हमला करने वाला गिरफ्तार

फतेहाबाद। गवाही देने की रंजिश में एक महिला पर जानलेवा हमला करने और जातिसूचक गालियां देने के मामले में थाना सदर फतेहाबाद पुलिस ने मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान होशियार सिंह पुत्र आत्माराम निवासी शहीदावाली के रूप में हुई है। इस बारे जानकारी देते हुए डीएसपी संजय ने बताया कि गांव शहीदावाली निवासी सावित्री देवी ने पुलिस को दिए बयान में बताया कि 28 फरवरी की शाम वह खेत से पशुओं का चारा लेकर लौट रही थी। इस दौरान आरोपियों ने रास्ता रोकककर अदालत में आरोपी के खिलाफ गवाही देने की पुरानी रंजिश को लेकर पीड़िता को जातिसूचक अपशब्द कहे और जान से मारने की धमकी दी।

बाबा ब्रह्मदास 15 को फतेहाबाद में

फतेहाबाद। शहर की नई अनाज मंडी, सिरसा रोड, फतेहाबाद में रविवार 15 मार्च को भक्ति सत्संग का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सेवादार हरभजन कम्बोज ने बताया कि यह सत्संग प्रातः 10.30 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक आयोजित होगा, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होंगे। इस धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन मुख्य डेरा बाबा भूमण शाह जी, ग्राम भूमणशाह, संगर साधा, सिरसा द्वारा किया जा रहा है। सत्संग में बाबा ब्रह्मदास पावन सानिध्य प्रदान करेंगे और श्रद्धालुओं को भक्ति, आध्यात्म और सत्संग के महत्व के बारे में प्रवचन देंगे। इस दौरान अटूट लंगर भी चलेगा। हरभजन कम्बोज ने बताया कि इस पावन सत्संग में क्षेत्र के श्रद्धालु बड़ी संख्या में भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त करेंगे।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर फतेहाबाद में होगा सम्मेलन

महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना बेहद जरूरी

युवतियों को आत्मरक्षा के विभिन्न उपायों के बारे में विस्तार से बताया

फतेहाबाद। जिला स्तरीय सम्मेलन में मौजूद अतिथिगण। फोटो : हरिभूमि

सिरसा। राज्य स्तरीय समारोह की तैयारियों में जुटे कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर फतेहाबाद में जिला स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान युवतियों को आत्मरक्षा और कानूनी जागरूकता से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी गई, ताकि वे अपने अधिकारों के प्रति सजग रह सकें और किसी भी परिस्थिति में स्वयं की रक्षा कर सकें। कार्यक्रम में एडवोकेट विष्णु डेलू ने उपस्थित युवतियों को आत्मरक्षा के विभिन्न उपायों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने भारतीय संविधान में महिलाओं की सुरक्षा और अधिकारों के लिए बनाए गए कानूनों की भी विस्तृत जानकारी दी और कहा कि महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना बेहद जरूरी है, ताकि वे किसी भी प्रकार के अन्याय का डटकर सामना कर सकें। इस अवसर पर भाजपा महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष डॉ. सुमन बजाज ने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के लिए सरकार निरंतर प्रयास कर रही है और महिलाओं को इन योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। यह कार्यक्रम एमएसडी स्प्रिंगवेल स्कूल में आयोजित किया गया। स्कूल की संचालिका कंचन मुंजल को महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बताते हुए उनके कार्यों की सराहना की गई। कार्यक्रम के संयोजक सुषमा सेठी और सहसंयोजक भारती सचदेवा रहीं। कार्यक्रम

महिला दिवस पर राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन आज

सिरसा। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के गौरवशाली 11 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय के मल्टीपर्पज हॉल में आठ मार्च रविवार को राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन किया जाएगा। समारोह में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी बतौर मुख्यातिथि शिरकत करेंगे। समारोह में महिला सशक्तिकरण, उनके अधिकारों और समाज में उनके महत्वपूर्ण योगदान की झलक दिखाई देगी। जिला प्रशासन द्वारा समारोह को लेकर सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। उपायुक्त शांतनु शर्मा ने कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस महिलाओं के सम्मान, समानता और सशक्तिकरण का प्रतीक है। समारोह के दौरान विभिन्न क्षेत्रों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सेवा, खेल और अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया जाएगा। इसके साथ ही महिला सशक्तिकरण से जुड़ी विभिन्न योजनाओं और उपलब्धियों को भी सांझा किया जाएगा, ताकि महिलाओं को अपने अधिकारों और अवसरों के प्रति जागरूक किया जा सके। उपायुक्त शांतनु शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि कार्यक्रम में आने वाले अतिथियों और प्रतिभागियों के लिए बैठने, पेयजल, पार्किंग और सुरक्षा व्यवस्था सहित सभी व्यवस्थाएं सुचारू रूप से सुनिश्चित की जाएं। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन की ओर से कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी आवश्यक प्रबंध किए गए हैं, ताकि आने वाले सभी प्रतिभागियों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

आक्रोश रैली को लेकर 8 गांवों में होंगी जनसभाएं

फतेहाबाद। आक्रोश रैली को लेकर आयोजित बैठक में भाग लेते माकपा नेता।

- 24 मार्च को दिल्ली के रामलीला मैदान में होगी ऐतिहासिक आक्रोश रैली : जगतार सिंह

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

मनरेगा को बचाने, पुराने श्रम कानून लागू करने, काटी गई बुढ़ापा पैंशन, राशन कार्ड बहाल करने सहित अन्य मांगों को लेकर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी द्वारा आगामी 24 मार्च को दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में एक विशाल 'आक्रोश रैली' की जाएगी। इस रैली में देशभर से लाखों की संख्या में किसान, मजदूर और आम नागरिक शिरकत करेंगे। रैली की तैयारियों को लेकर माकपा जिला कमेटी की बैठक हुई, जिसमें आक्रोश रैली में फतेहाबाद से कार्यकर्ताओं की भागीदारी को लेकर विस्तार से चर्चा की गई और जिले के गांवों में जनसम्पर्क अभियान चलाने का निर्णय लिया गया।

माकपा के जिला सचिव जगतार सिंह ने बताया कि दिल्ली रैली को ऐतिहासिक बनाने के लिए जिले में बड़े स्तर पर जनसंपर्क अभियान चलाया जाएगा। इसके तहत जिले के 8 प्रमुख गांवों में 10 व 11 मार्च को जनसभाओं का आयोजन होगा। इस जनसम्पर्क अभियान की शुरूआत 10 मार्च मंगलवार को प्रातः 10 बजे गांव जांडवाला बागड़ से होगी। इसके बाद ढाबी कलां, पाबूजी मंदिर, भट्टूकलां व भूथन चौक में जनसभा की जाएगी।

मजदूरों के अधिकारों की उठाएंगे मांग

जिला कमेटी की बैठक को संबोधित करते हुए राज्य सचिव प्रेमचंद ने कहा कि केंद्र सरकार अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ टैरिफ मुक्त समझौते करके देश की संप्रभुता को खतरे में डाल रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि ऐसे समझौतों से देश दोबारा आर्थिक गुलामी की ओर बढ़ रहा है। रैली के माध्यम से मांग की जाएगी कि मजदूरों के हक में बने पुराने श्रम कानूनों को बहाल किया जाए और हाल ही में लागू की गई 4 श्रम संहिताओं को तुरंत रद्द किया जाए। 12 घंटे काम के नियम का विरोध करते हुए इसे मजदूरों को बंधुआ बनाने की साजिश करार दिया गया।

रैपर बादशाह के गाने पर भड़के महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट ने फूंका पुतला, दी शिकायत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रतिया

बॉलीवुड सिंगर-रैपर बादशाह के विवादित सॉन्ग 'टटीरी' को लेकर हरियाणा के लोगों में काफी रोष है। महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष भवानी सिंह के नेतृत्व में शनिवार को बस स्टैंड के पीछे महाराजा रेस्टोरेंट के पास सिंगर व रैपर बादशाह का पुतला फूंका गया और उसके बाद बादशाह के खिलाफ शहर थाना में शिकायत देकर मामला दर्ज करने की मांग की गई। भवानी सिंह ने बताया कि टटीरी नामक गाने में सिंगर व रैपर बादशाह द्वारा स्कूली छात्राओं को दर्शाते हुए उनके संबंध में नगनता व अश्लील शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिससे हमारी भावनाओं अत्यंत ठेस पहुंची है, क्योंकि इस प्रकार के गाने समाज में अश्लीलता फैलाने का कार्य करते हैं। यह हरियाणा की संस्कृति, मान-मर्यादा और सामाजिक मूल्यों के विपरीत है। इस प्रकार की सामग्री से समाज में गलत संदेश जाता है तथा युवाओं व विद्यार्थियों पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है इसलिये सिंगर बादशाह के विरुद्ध उचित कानूनी कार्यवाही की जाए, ताकि भविष्य में कोई भी व्यक्ति इस प्रकार की अशोभनीय हरकत करने का साहस न करे।

रतिया। रैपर बादशाह का पुतला फूंकते महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट के सदस्य।

ई-दिशा केन्द्र के पास युवक से नकदी छीनी आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। लघु सचिवालय में ई-दिशा केन्द्र के पास एक व्यक्ति से नकदी छीनने के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना शहर फतेहाबाद पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। काबू किए गए आरोपी की पहचान हवा सिंह उर्फ गांजा पुत्र फकीर चंद निवासी जुगलान, जिला हिसार के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से छीनी गई 17 हजार रुपये की नगदी बरामद की है। थाना शहर फतेहाबाद प्रभारी निरीक्षक सुरेंद्रा ने बताया कि इस संबंध में रणधीर सिंह पुत्र रणसिंह निवासी गांव बरसीन ने पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायत में बताया कि 6 मार्च को वह अपने निजी कार्य से फतेहाबाद सचिवालय स्थित ई-दिशा केंद्र के पास गया हुआ था। इसी दौरान उसे अपने एक जानकार को पैसे देने थे, इसलिए वह अपनी जेब से पैसे निकालकर गिनने लगा।

बैंक अकाउंट केवाईसी लिंक फ्रॉड से रहें सावधान, साइबर सुरक्षा एडवाइजरी जारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने बैंक अकाउंट केवाईसी अपडेट के नाम पर बढ़ते साइबर फ्रॉड मामलों को लेकर आम नागरिकों को सतर्क करते हुए साइबर सुरक्षा एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में साइबर अपराधी बैंक, डिजिटल भुगतान प्लेटफॉर्म और सरकारी संस्थानों के नाम पर फर्जी मैसेज, ई-मेल, व्हाट्सएप संदेश और लिंक भेजकर लोगों को ठगी का शिकार बना रहे हैं। साइबर ठग खुद को बैंक कर्मचारी या अधिकृत प्रतिनिधि बताकर मैसेज या कॉल करते हैं। मैसेज में यह दावा किया जाता है कि आपके बैंक खाते की केवाईसी अधूरी है या जल्द अपडेट न करने पर खाता बंद कर दिया जाएगा। इसके बाद पीड़ित को एक फर्जी लिंक भेजा जाता है, जिस पर क्लिक करने के लिए दबाव बनाया जाता है। लिंक पर क्लिक करते ही फर्जी वेबसाइट खुलती है, जहां बैंक खाता संख्या, एटीएम पिन, ओटीपी, सीवीवी या नेट बैंकिंग डिटेल भरने को कहा जाता है। जैसे ही व्यक्ति यह जानकारी दर्ज करता है, साइबर अपराधी उसके बैंक खाते से रकम निकाल लेते हैं या खाते का पूरा नियंत्रण हासिल कर लेते हैं।

साइबर ठगी को लेकर किया जागरूक

एसपी सिद्धांत जैन ने कहा कि कोई भी बैंक या वित्तीय संस्था कभी भी फोन कॉल, मैसेज या लिंक के माध्यम से केवाईसी अपडेट कराने के लिए गोपनीय जानकारी नहीं मांगती। किसी भी केवाईसी अपडेट लिंक पर क्लिक न करें। केवाईसी से संबंधित जानकारी केवल बैंक शाखा या आधिकारिक बैंक ऐप/वेबसाइट के माध्यम से ही अपडेट करें। ओटीपी, एटीएम पिन, पासवर्ड और सीवीवी किसी को न बताएं। व्हाट्सएप, एसएमएस या ई-मेल में आए संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करें। ठगी की स्थिति में तुरंत 1930 साइबर हेल्पलाइन पर कॉल करें।

टावर लगाने का झांसा देकर 3.62 लाख हड़पे

- रजिस्ट्रेशन के नाम पर पहले 2500 रुपये ट्रांसफर करवाए
- 21 दिसंबर को टावर से जुड़े फर्जी कागजात डाक से भेजे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

साइबर ठगों ने टावर लगाने का झांसा देकर फतेहाबाद के एक व्यक्ति से 3.62 लाख रुपये हड़प लिए। पीड़ित को जब अपने साथ हुई ठगी का पता चला तो उसने इस बारे ऑनलाइन शिकायत दर्ज करवाई। इस मामले में साइबर थाना फतेहाबाद पुलिस ने केस दर्ज किया है। पुलिस को दी शिकायत में सरदूल सिंह पुत्र हाकम सिंह निवासी ढाणी बबनपुर, मुसाखेड़ा ने कहा है कि वह खेतीबाड़ी का काम करता है। 15 दिसंबर 2025 को उसने फेसबुक पर एड देखी और उस पर क्लिक किया।

इसके बाद 17 दिसंबर को उसके पास टावर लगवाने के लिए कॉल आई। फोन करने वाले ने उससे उसकी लोकेशन पूछी और आईडी प्रूफ मांगे। इसके बाद रजिस्ट्रेशन के नाम पर उससे 2500 रुपये ट्रांसफर करवा लिए। इसके बाद 21 दिसंबर को उसके पास टावर से सम्बंधित कुछ कागजात डाक के द्वारा भेजे गए। उसके बाद उससे ओर रुपयों की मांग की गई। सरदूल सिंह ने बताया कि वह उनकी बातों में आ गया और उसने बताए गए खाते में 22 हजार 500 रुपये बैंक में जाकर डलवा दिए।

बाद में उक्त लोगों ने टावर के कागज तैयार करने के नाम पर रुपये मांगे तो उसने 8 जनवरी को 45 हजार रुपये डलवा दिए। इसके बाद 10 जनवरी को 10 हजार रुपये, 12 जनवरी को सात हजार रुपये, 15 जनवरी को 9 हजार रुपये, 17 जनवरी को 19 हजार 750 रुपये, 20 जनवरी को 50 हजार रुपये, 23 जनवरी को 30 हजार रुपये, 27 जनवरी को 19 हजार रुपये, 30 जनवरी को 2500 रुपये, 31 जनवरी को 20 हजार रुपये डलवा दिए।

इसके बाद उसने 4 फरवरी को 50 हजार रुपये, 6 फरवरी को 35 हजार रुपये, 10 फरवरी को 30 हजार रुपये, 12 फरवरी को 9900 रुपये डलवा दिए। शिकायतकर्ता ने बताया कि बाद में उसे आभास हुआ कि उसके साथ फ्राड हुआ है।

सीमेंट सस्ते दाम पर देने के नाम पर ठगी का मामला

फतेहाबाद। सस्ते दाम पर सीमेंट देने का लालच देकर हजारों रुपये की ठगी करने के मामले में कार्रवाई करते हुए थाना शहर टोहाना पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान सलींदर पुत्र सादात निवासी खन्नू वाली बस्ती, जिला फिरोजपुर, पंजाब के रूप में हुई है। थाना शहर टोहाना के प्रभारी कुलदीप सिंह ने बताया कि इस संबंध में जगबीर सिंह निवासी गीता कॉलोनी, टोहाना ने पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायतकर्ता ने बताया कि वह शहर टोहाना में नक्शा-नवीस का कार्य करता है। दिसंबर 2025 में उसके घर पर निर्माण कार्य चल रहा था। 24 दिसंबर को को उसके मोबाइल नंबर पर एक अज्ञात व्यक्ति का फोन आया, जिसने स्वयं को अल्ट्रा टेक सीमेंट कंपनी का कर्मचारी बताया और सस्ते दाम पर सीमेंट उपलब्ध करवाने की बात कही।

असंवैधानिक रूप से चयनित प्रधान संघ को स्वीकार्य नहीं: राजकुमार सोनी

- आठ मार्च को सोनी धर्मशाला में चुनाव प्रक्रिया पूरी की जाएगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

स्वर्णकार संघ के जिला प्रधान पद के लिए संवैधानिक रूप से प्रक्रिया अमल में लाई जा रही है, लेकिन समाज के कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा अपनी मर्जी से ही प्रधान का चयन कर लिया, जोकि संघ को किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं है। 8 मार्च को शहर की बेगू रोड स्थित सोनी धर्मशाला में सुबह 10 बजे चुनाव प्रक्रिया पूरी की जाएगी और जो भी प्रधान चुना जाएगा, वो संघ को स्वीकार्य होगा। उक्त बातें चुनाव कमेटी के चेयरमैन राजकुमार सोनी ने शनिवार की सांय मीडिया से बातचीत करते हुए कही।अखिल भारतीय स्वर्णकार संघ के राष्टीय चेयरमैन द्वारा बकायदा इसके लिए एक पत्र जारी कर चार सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया था, लेकिन प्रधान चयन करने वाले लोगों ने कमेटी के सदस्य डा. रविंद्र वर्मा को बहलाकर गुपचुप तरीके से प्रधान का चयन कर लिया, जबकि चुनाव कमेटी को इस संबंधी कोई जानकारी नहीं दी गई।

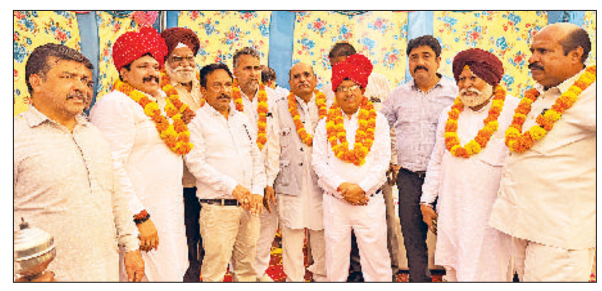

सिरसा। स्वर्णकार संघ के चुने पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

राजकुमार सर्वसम्मति से बने स्वर्णकार संघ के जिला प्रधान

- समाज की एकता और व्यापार से जुड़े मुद्दों पर की चर्चा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

नई कार्यकारिणी के गठन को लेकर स्वर्णकार संघ की एक बैठक हुई जिसमें जिलाभर से स्वर्णकार समाज और ज्वेलर्स से जुड़े कई गणमान्य सदस्य मौजूद थे। बैठक के दौरान सर्वसम्मति से राजकुमार सोनी को स्वर्णकार संघ का जिला प्रधान चुन लिया गया। संगठन के चेयरमैन करतार सिंह जौरा की ओर से नई कार्यकारिणी के गठन की प्रक्रिया को निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से पूरा कराने के लिए ऑब्जर्वर नियुक्त किए गए थे। बैठक राष्ट्रीय सचिव डॉ. रविंद्र वर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष निर्मल सिंह कंडा, प्रदेश उपाध्यक्ष राजवीर सोनी और राष्ट्रीय एग्जीक्यूटिव मेंबर अशोक कुमार कंडा की मौजूदगी में संपन्न हुई। बैठक के दौरान स्वर्णकार समाज से जुड़े व्यापारियों और ज्वेलर्स ने संगठन की मजबूती, समाज की एकता और व्यापार से जुड़े मुद्दों पर भी चर्चा की। इसके बाद सभी सदस्यों की सहमति से राजकुमार सोनी को स्वर्णकार संघ सिरसा का जिला प्रधान चुना गया। नवनियुक्त जिला प्रधान राज कुमार सोनी ने इस मौके पर स्वर्णकार समाज के सभी सदस्यों का आभार जताते हुए कहा कि उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी गई है, उसे वे पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ निभाएंगे।

अभियान 30 अप्रैल 2026 तक संचालित किया जाएगा

जेल में बंद महिला व वृद्ध बंदियों को शिविर लगाकर किया जागरूक

नालसा और हालसा की विभिन्न योजनाओं के बारे में भी जागरूक किया जा रहा है

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा मार्च और अप्रैल माह में स्कीम न्याय और सम्मान के अंतर्गत महिला एवं वृद्ध बंदियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम और प्रचार अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य जेल में बंद महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें न्याय तक आसान पहुंच सुनिश्चित करना है। यह अभियान 30 अप्रैल 2026 तक संचालित किया जाएगा।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सीजेएम एवं सचिव प्रवेश सिंगला ने बताया कि इस अभियान के तहत पात्र बंदियों के मामलों की समीक्षा की जा रही है और उन्हें आवश्यक विधिक सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है। साथ ही बंदियों को उनके संवैधानिक अधिकारों, मुफ्त कानूनी सहायता, जमानत के प्रावधान, पेरोल एवं फरलो की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी जा रही है। इसके अतिरिक्त नालसा और हालसा की विभिन्न योजनाओं के बारे में भी जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में जिला जेल में स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाए जा रहे हैं। लीगल एड डिफेंस काउंसल सिस्टम द्वारा इन कैंपों का आयोजन किया जा रहा है, ताकि बंदियों के स्वास्थ्य की जांच कर आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा सकें। इसके साथ ही सभी बंदियों को नालसा के टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर 15100 की जानकारी भी दी जा रही है और अपील की गई है कि मुफ्त कानूनी सहायता प्राप्त करने के लिए इस नंबर पर संपर्क किया जा सकता है।

सिरसा। जिले जेल में बंदियों को जागरूक करते।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
विशेष
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
रोहतक, रविवार 8 मार्च 2026

हर क्षेत्र में फहरा रहा आधी आबादी का परचम

अब वो दिन लद गए, जब आधी आबादी के लिए कुछ निश्चित कार्यक्षेत्र ही हुआ करते थे। आज के दौर में बेटियां हर उस क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, जिन्हें पहले उनके लिए वर्जित माना जाता था। देश की सुरक्षा से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान तक और खेल के मैदानों में भी कामयाबी की नित नई मिसालें गढ़ रही हैं। आधी आबादी के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते कदम पर एक नजर।

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

अभी सुबह के 4 बज रहे हैं। हरियाणा के एक छोटे से गांव में रहने वाली 19 साल की एक लड़की अपने जूतों में फीते कस रही है। उसके सामने कोई दर्शक नहीं है, कोई कैमरा नहीं है। है तो सिर्फ एक लंबा सा ट्रैक और दिल दिमाग में एक रंगीन सपना। यह सपना एथलेटिक्स में कुछ कर दिखाने का है। यह सपना किसी एक हरियाणवी लड़की का ही नहीं है, बल्कि आज भारत की हजारों-लाखों किशोरियों और युवतियों की आंखों में खेल से लेकर सेना और विज्ञान जैसे सभी जटिल और एक जमाने तक पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में कुछ कर दिखाने का है। साल 2026 का भारत इस मायने में ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है, क्योंकि आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां युवा महिलाएं दस्तक न दे रही हों। अब देश में कोई ऐसा क्षेत्र विशेष नहीं रहा, जिसे एक्सक्लूसिविली पुरुषों का वर्चस्व वाला क्षेत्र कहा जा सके। सभी क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर भारत की युवा महिलाएं खड़ी हैं।

गढ़ रहीं जीत की नई परिभाषा

भारत में खेल लंबे समय तक पुरुषों के वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाता रहा है। लेकिन हाल के कुछ दशकों में युवा महिलाओं ने इस धारणा को बदल दिया है। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर भारत आदि की युवा महिला एथलीटों ने ओलंपिक, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व चैंपियनशिप में कामयाबी के झंडे गाड़े हैं। साल 2024 के पेरिस ओलंपिक में भारत की महिला खिलाड़ियों ने कुल पदकों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उसके पहले कई ओलंपिक खेल ऐसे भी संपन्न हुए हैं, जब भारत की तरफ से कामयाबी का सेहरा सिर्फ लड़कियों के सिर बंधा है। आज बैडमिंटन, शूटिंग, क्रिकेट, हॉकी, रेसलिंग और बॉक्सिंग ये ऐसे खेल हैं, जिनमें भारत की बेटियां राज कर रही हैं। अब देश के गांवों से युवा महिला पहलवान और मुक्केबाज निकल रही हैं। खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, खेलों को लेकर शुरू की गई कई शानदार सरकारी योजनाएं, जिसमें एक प्रमुख योजना 'खेलो इंडिया' भी शामिल है। इसमें बेहतर प्रशिक्षण की बदौलत भारतीय लड़कियां पूरी दुनिया में कामयाबी के झंडे गाड़ रही हैं। लेकिन इससे बड़ा परिवर्तन उन भारतीय परिवारों का है, जो उनकी मानसिकता में आया है। अब गांवों में भी मां-बाप बेटियों को खेल के मैदान में खुशी-खुशी भेजने लगे हैं। जबकि एक समय तक उन्हें सिर्फ शादी के लिए पाल पोसकर बड़ा किया जाता था।

संभाल रहीं सुरक्षा की कमान

लंबे समय तक भारतीय सेना में महिलाओं के लिए बहुत सीमित अवसर प्रदान करती रही है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में यह स्थिति तेजी से बदली है। आज युवा महिलाएं न केवल बड़ी संख्या में सैन्य अधिकारी बन रही हैं बल्कि लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं, वे युद्ध पोतों पर तैनात हैं। भारतीय वायु सेना में महिला फाइटर पायलटों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साल 2003 के बाद राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) में महिलाओं के प्रवेश ने इस बदलाव को गति दी है। अब 18-19 वर्ष की लड़कियां सीधी एनडीए में प्रशिक्षण लेकर सेना की स्थायी अधिकारी बन रही हैं। यह बदलाव सिर्फ सैन्य संरक्षण का बदलाव नहीं है बल्कि सामाजिक सोच में आए परिवर्तन का संकेत है। एक समय था, जब सेना को पूर्णतः पुरुषों का पेशा माना जाता था। लेकिन अब युवा महिलाएं सीमा की सुरक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। नौसेना में भी महिलाएं युद्ध पोतों पर तैनात हैं। लंबी समुद्री यात्राओं का हिस्सा हैं और यह साबित कर रही हैं कि शारीरिक और मानसिक क्षमता के मामले में महिलाएं किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं हैं। पुरुषों के समान ही वे भारतीय सीमाओं की रक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ रही हैं।

हासिल कर रहीं वैज्ञानिक उपलब्धियां

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी युवा महिलाएं बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), राष्ट्रीय रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) और विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों में महिलाओं की न केवल भागीदारी बहुत तेजी से बढ़ रही है बल्कि कई क्षेत्रों में तो वो पुरुषों से भी आगे हैं। हाल के सालों में देश के सबसे महत्वपूर्ण माने गए चंद्रयान और मंगलयान जैसे अंतरिक्ष मिशनों में भारतीय महिला वैज्ञानिकों की कामयाबी देखते ही बनी है। यही कारण है कि आज देश में विज्ञान के क्षेत्र में दाखिला लेने वाली लड़कियों की बड़ी संख्या सामने आ रही है, क्योंकि आज भारत की एक नहीं बल्कि अनेक अंतरिक्ष अभियानों में भारत की युवा महिलाएं कामयाबी का श्रेय हासिल कर रही हैं। अंतरिक्ष विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और रक्षा अनुसंधान में भी इनकी भूमिका और योगदान पुरुषों से पीछे नहीं है। आईआईटी, आईआईएससी और अन्य प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों में जाकर देख लीजिए, आज ज्यादातर जगहों में महिला छात्र, पुरुष छात्रों के बराबर हैं, कहीं कुछ कम हैं। ये छात्राएं न केवल पढ़ाई कर रही हैं बल्कि अपनी मौलिक मेधा से अपने लक्षित कार्यक्रमों में सफलता हासिल करके उपलब्धियों की नई कहानी रच रही हैं। *

बदल रही है सामाजिक मानसिकता

हमारी बेटियों को यह शानदार सफलताएं मिल रही हैं, तो इसमें समाज की सोच और उसके नजरिए में बदलाव का भी बड़ा योगदान है। पहले जहां बेटियों के लिए सीमित विकल्प होते थे, अब वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। छोटे शहरों से आने वाली युवा महिलाएं अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा बिखेर रही हैं। डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने भी इस परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभाई है। इसलिए अब समाज के विभिन्न तबकों से उठकर आने वाली महिलाएं अपने आपको भावी रोल मॉडल में देख सकती हैं और उनसे प्रेरणा हासिल कर सकती हैं। हालांकि यह अलग बात है कि अभी महिलाओं ने अपने हिस्से की सारी जंग जीती नहीं है। अभी भी अनेक किस्म की चुनौतियां मौजूद हैं। लेकिन चुनौतियां तो हर क्षेत्र में हैं। असली बात यह है कि महिलाएं लगातार हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। हालांकि कुछ मां-बाप जिनकी वजह से महिलाओं की अभी भी पिछड़ी सोच है, उन्हें जल्द से जल्द अपने को बदलना होगा। नहीं तो वो लोग इन्हें अपने साख से खारिज कर देंगे, जिनकी नजरों में लड़का और लड़की बराबर है। आज के इस एआई दौर में एआई का विश्लेषण बताता है कि आने वाले भविष्य में लड़कियों की मौजूदगी और भी महत्वपूर्ण होगी। विशेषकर इस लिहाज से भी कि अब नई पीढ़ी में लड़कियां जाति और लिंग से परिभाषित नहीं होतीं। अपने काम और काम में हासिल महारत से सम्मान पा रही हैं।

बीते कुछ दशकों में हमारे समाज की महिलाएं घर-परिवार की जिम्मेदारी संभालने के साथ कार्यक्षेत्र में भी शानदार मुकाम हासिल करने लगी हैं। यह नया सामाजिक बदलाव, परिवार और कार्यक्षेत्र में संतुलन की उनकी कुशल भूमिका से ही संभव हो पा रहा है।

परिवार-कार्यक्षेत्र में संतुलन बनातीं महिलाएं

{ बदलाव / अपराजिता }

आठ मार्च, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, केवल एक उत्सव का दिन नहीं है। यह गहरे सामाजिक परिवर्तन और प्रतीक का दिन भी है। यही प्रतीकात्मक परिवर्तन, भारत की युवा महिलाओं की सोच, प्राथमिकताओं और जीवन के निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। एक जमाना था, जब अधिकांश युवतियां विवाह को ही सबसे जरूरी लक्ष्य मानकर जीवन जीती थीं। लेकिन आज भारत की युवा नारी के लिए विवाह एकमात्र जीवन लक्ष्य नहीं है बल्कि यह उसके जीवन के कई विकल्पों में से एक है। भारत की युवा महिलाएं करियर, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को इन दिनों बराबर का महत्व दे रही हैं और उनकी प्राथमिकता में यह सब अचानक नहीं आया, इसके पीछे दशकों की शिक्षा, आर्थिक अवसरों का विस्तार तथा आत्मसम्मान की नई जागृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं सबके चलते विवाह जो कभी जीवन का एकमात्र प्रथम और आखिरी लक्ष्य हुआ करता था, आज की महिलाओं के लिए वह एक वैकल्पिक बन चुका है।

सोच में आया बड़ा बदलाव: पहले के दौर में जहां लड़कियां परिवार और समाज के दबाव में अपनी शिक्षा और करियर को लेकर समझौता कर लेती थीं, आज वे कतई ऐसा नहीं कर रही हैं। आज युवा महिलाएं अपनी पहचान का केंद्र विवाह को नहीं, अपनी निजी उपलब्धियों (जिनमें करियर और उनकी अपनी रचनात्मकता शामिल है) को विवाह से कहीं ज्यादा तरजीह दे रही हैं। आज की युवा महिलाएं पहले अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं, अपनी आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करना चाहती हैं, इसके बाद विवाह के बंधन में बंधती हैं।

दिल्ली, बेंग्लुरु, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई और कोलकाता ही नहीं बल्कि रांची, लखनऊ और जयपुर जैसे शहरों में भी अब यह बदलाव तेजी से देखने को मिल रहा है। आज इन शहरों में ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे कस्बों में भी युवा महिलाओं की विवाह की उम्र बहुत आसानी से 28 से 30 साल के बीच हो गई है। जबकि एक जमाना था, जब किसी महिला की 20 साल तक अगर शादी नहीं होती थी, तो घर-परिवार में हंगामा मच जाता था। यही नहीं आज देश में 8 करोड़ से ज्यादा महिलाएं अपने स्वतंत्र निर्णय के चलते बिना विवाह किए रह रही हैं। आज के 30-40 साल पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वास्तव में महिलाओं में आया यह बदलाव सिर्फ शादी की उम्र में देरी का बदलाव नहीं है बल्कि उनकी सोच में अपने प्रति आई परिपक्वता का बदलाव है।

मनमुताबिक ले रहीं निर्णय: अब महिलाएं बड़ी सहजता से अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संबंध में निर्णय लेने लगी हैं और यह निर्णय केवल घर से हजारों किलोमीटर दूर जाकर काम करने भर का नहीं है बल्कि यह निर्णय इस मामले में भी है कि उन्हें किस क्षेत्र में अपना करियर बनाना है, कब विवाह करना है और किस तरह की जीवनशैली अपनानी है? डिजिटल युग ने युवा महिलाओं की इस स्वतंत्रता को नए सिरे से मजबूत किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने महिलाओं को जानकारी देने, उन्हें प्रेरित करने और आगे बढ़ने के कई नए अवसर प्रदान किए हैं। आज की युवा महिलाएं देश ही नहीं दुनिया को अपनी नजरों से देख सकती हैं, समझ सकती हैं और अपने संबंध में बेहतर विकल्प चुन सकती हैं। यह स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी है। इस बदलाव में परिवार की भूमिका भी कहीं न कहीं शामिल है। *

बदलती प्राथमिकताओं की नई तस्वीर

- भारत की महिलाओं की औसत विवाह आयु अब 20 से 22 वर्ष से बढ़कर 25 से 28 वर्ष हो चुकी है।
- उच्च शिक्षा में छात्राओं की भागीदारी अब 59 फीसदी तक पहुंच गई है।
- सिविल सेवा परीक्षा में उनकी सफलता की दर बढ़कर 30 से 35 प्रतिशत हो चुकी है।
- स्टार्टअप के इकोसिस्टम में भी अब महिलाएं अपनी हिस्सेदारी हासिल कर रही हैं। आज हजारों की तादाद में युवा महिलाएं हैं, जिनके अब स्टार्टअप चल रहे हैं और उनकी यह संख्या लगातार बढ़ रही है।
- कॉरपोरेट क्षेत्र में महिला कर्मचारियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों महिलाएं स्वरोजगार से भी जुड़ रही हैं। इस तरह अब नई पीढ़ी की महिलाएं आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि निर्णायक बन रही हैं।

{ कविता
कुसुम अग्रवाल }

एक सपना

मैंने देखा था इक सपना
सपने में थी मोटर-कार।
स्टेयरिंग, सीटें, सब कुछ उसमें,
पर नहीं थे पहिए चार।
मैंने सोचा, 'कैसे दौड़े?
कैसे पकड़ेगी रफ्तार?'
एक जगह जो खड़ी रहे तो
हो जाए बिल्कुल बेकार।
हंसकर बोली मोटर मुझसे,
जान गई हूं मन की बात।
पहिए तुम्हें जोड़ने होंगे
तब दौड़ूंगी दिन एक रात।
पहला पहिया साहस का हो,
दूजा हो आत्मविश्वास।
तीसरा पहिया मेहनत वाला
चौथा दृढ़ संकल्प-प्रयास।
जब ये चारों संग जुड़ेंगे,
राह सरल बन जाएगी।
जीवन रूपी गाड़ी तब ही
मंजिल तक पहुंचाएगी।

{ लघुकथाएं }

सपनों की उड़ान

'तुम्हारे जाने की टिकट बुक करवा दूं?' दिवेश का मैसेज आए आधे घंटे हो चुके थे, लेकिन रीमा को कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। मन कुछ कह रहा था, दिमाग कुछ और!

थोड़ी देर में दिवेश का फोन आया, उसने पूछा, 'क्या हुआ तुमने कोई जवाब नहीं दिया?' 'क्या जवाब दूं, समझ नहीं आ रहा मुझे!' रीमा बुझे स्वर में बोली।

'लिटरेचर का इतना बड़ा सेमिनार है, लेकिन तुम सब को छोड़कर हफ्ते भर के लिए बाहर जाना सही नहीं रहेगा। मेरा ध्यान यहीं लगा रहेगा।' इतना कह रीमा ने फोन रख दिया।

शाम को दिवेश दफ्तर से आए। सभी रुटीन के हिसाब से अपने-अपने काम में लगे थे। रीमा ने संतुष्टि भरी दृष्टि से सबको देखा, फिर वह भी अपने काम में लग गई।

थोड़ी देर बाद दिवेश रसोई में आए और रीमा के हाथों में एक पैकेट थमाते हुए बोले, 'सबका ध्यान रखना और सबसे प्यार करना अच्छी बात है, लेकिन थोड़ा अपने बारे में भी सोचना पाप नहीं। मैं तुम्हारे लिए अच्छी सी ड्रेस लेकर आया हूं। तुम यही ड्रेस पहन कर अपने सेमिनार में जाना। मैंने तुम्हारे जाने का टिकट बुक कर दिया है।'

एआई इमेज

'लेकिन बच्चे..!' रीमा ने पूछा।

'हम लोग रह लेंगे मम्मा। बड़े हो गए हैं हम भी। पापा ने हमें सब बता दिया है।' पीछे से बच्चों की आवाज आई।

'हां बिल्कुल! आज मैं, कल को बच्चे अपने सेमिनार और दूसरे कामों से बाहर जाएंगे ही। फिर तुम क्यों सब कुछ छोड़ती रहो! बेझिझक जाओ।' दिवेश बोले।

रीमा का चेहरा खुशी से खिल उठा। अपने सपनों को पंख लगते देख उसकी आंखें छलछला उठीं। *

-अलका 'सोनी'

हार्दिक शुभकामनाएं!

'शांति आधे घंटे की छुट्टी मिली है...जल्दी से रोटी खा ले, वरना ठेकेदार चिल्लाएगा।' बेला ने कहा।

'चिल्लाए तो... चिल्लाने दे। पहले मैं अपनी बेटी को दूध पिलाऊंगी...उसे भी तो भूख लग रही होगी।' शांति अपनी छह महीने की बच्ची को गोद में उठाते हुए बोली। कलेजे के टुकड़े को दूध पिलाकर लाड़ लड़ाते-लड़ाते कब आधा घंटा बीत गया...शांति को पता ही नहीं चला।

एआई इमेज

'अरी शांति की बच्ची... चल उठ काम पर लग जा देखती नहीं पांच मिनट ऊपर हो गए हैं...।' ठेकेदार चिल्लाया।

बेला बीच में बोल पड़ी, 'ठेकेदार जी, अभी शांति ने रोटी नहीं खाई है बच्ची को दूध पिला रही थी बेचारी...।'

'चल तू अपना काम कर... फालतू की पंचायत मत कर।'

ठेकेदार ने बेला को डांटा।

उसी समय एक सफेद चमचमाती कार आकर रुकी। उसमें से एक भद्र महिला बाहर निकली। ठेकेदार दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा। उन्हें एक गुलदस्ता देते हुए बोला, 'मैडम, महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।' *

-गोविंद भारद्वाज

घरेलू महिला

'आशी को बस घरेलू काम आते हैं। देखो, इस कमरे को कैसा चमका रखा है।' आशी का पति पवन अपने दोस्तों के साथ गपशप करते हुए बोला।

आशी इन दिनों एक परिचित के विवाह समारोह में शामिल होने शहर से बाहर गई हुई थी। पवन ने घर पर दोस्तों के साथ गपशप के बाद सबको विदा किया ही था कि आशी का फोन आया। वह पति से बोली, 'पवन, बस कुछ मिनटों का एक काम है। पूजा घर में एक हरी फाइल रखी है। उसे निकालकर देख लो और पॉलिसी की किश्त जमा कर देना जरा।'

इतना कहकर और बाकी हाल-चाल पूछकर आशी ने फोन काट दिया।

पवन को झुंझलाहट हुई, अब तक पॉलिसी के रुपए आशी ही जमा करती रही थी। 'अजीब है यह आशी भी, इतना सा काम नहीं होता इससे।' बड़बड़ करता पवन पूजा घर में पहुंचा।

एआई इमेज

हरी फाइल एक नजर में ही ऊपर रखी दिख गई। उसने फाइल को खोला। ऊपर ही वह पॉलिसी रखी थी। उसके बाद उत्सुकता से पवन ने पूरी फाइल पलटकर देख ली। एक-एक कागज को करीने से उसमें रखा गया था। एक सूची भी अलग से बना रखी थी कि किस साल कौन-सी पॉलिसी मैच्योर हो रही हैं। इतना ही नहीं एक छोटी-सी नोटबुक में पासवर्ड भी लिखे थे। आशी को पवन बस घरेलू महिला ही मानता था। लेकिन उसका तो हर काम इतना सलीके से होता है। पवन ने पॉलिसी के रुपए जमा कर दिए। फाइल को करीने से यथास्थान रख दिया।

अब वह अपने शेल्फ को ठीक कर रहा था। जहां उसने अपने निजी कागज कचरे की तरह यहां-वहां घुसा रखे थे। *

-पूनम पांडे

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

स्त्री केंद्रित कहानियां

समाज के दमित, शोषित और वंचित वर्ग के साथ ही मुशी प्रेमचंद ने स्वाधीनता से पहले स्त्रियों की सामाजिक दशा पर भी कई मर्मस्पर्शी कहानियां लिखी हैं। उनके द्वारा लिखी गई सोलह स्त्री केंद्रित कहानियों का संकलन हाल में पल्लव के संपादन में छपकर आया है। इन कहानियों से गुजरते हुए स्त्री जीवन की अलग-अलग छवियां प्रकट होती हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने मुख्य तौर पर अन्याय, अनाचार और शोषण के विरुद्ध अपना स्वर बुलंद करने वाले स्त्री पात्रों को ही रचा है। फिर वो चाहे 'कुसुम' कहानी की मुख्य पात्र कुसुम हो, जो विवाह होने के बाद भी दहेज के विरोध में आक्रोश प्रकट करते हुए दांपत्य के बंधन को तोड़कर स्वतंत्र रहने के लिए तैयार हो जाती है या 'सती' कहानी की विधवा मुलिया हो, जो अपनी अस्मिता पर कुदृष्टि रखने वाले का पूरी दृढ़ता से प्रतिकार करती है। या फिर 'विध्वंस' कहानी की भुनगी, जो अपने परिश्रम का वाजिब मूल्य मांगने से नहीं झिझकती है। कह सकते हैं कि लगभग एक सदी पहले के संकीर्ण और परंपरावादी सोच से ग्रस्त भारतीय समाज में भी प्रेमचंद की कहानियां, स्त्री सशक्तिकरण की आवाज बुलंद करती हैं। *

पुस्तक: प्रेमचंद की स्त्री कथाएं, **संपादन:** पल्लव, **मूल्य:** 250 रुपए, **प्रकाशक:** राजपाल एंड संस, दिल्ली

विगत 5 मार्च से आरंभ हुआ गोवा का शिग्मो उत्सव, आगामी 18 मार्च तक आयोजित होगा। यह गोवा की सांस्कृतिक पहचान है। यह उत्सव स्थानीय निवासियों की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है और उन्हें अपनी परंपरा पर गर्व करने का अवसर भी देता है। इस उत्सव की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर।

गोवा की लोक-संस्कृति का रंगोत्सव शिग्मो

सांस्कृतिक पर्व
धीरज बसाक

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित गोवा, अपनी समुद्र तटीय सुंदरता के कारण पर्यटकों के बीच जितना लोकप्रिय है, उतना ही अपने समृद्ध लोक संस्कृति के कारण भी यह प्रसिद्ध है। गोवा लोक संस्कृति का सबसे समृद्ध घर माना जाता है और इस समृद्ध लोक संस्कृति का सबसे जीवंत और रंगीन प्रतीक है शिग्मो फेस्टिवल या शिग्मो उत्सव। शिग्मो उत्सव केवल एक वार्षिक पर्व भर नहीं है, बल्कि गोवा के ग्रामीण जीवन, लोक परंपराओं, लोक नृत्यों और ऐतिहासिक स्मृतियों का संवेदनशील और सामूहिक उत्सव भी है।

वसंत के आगमन का उत्सव

वास्तव में शिग्मो, गोवा का पारंपरिक वसंत उत्सव है, जो होली से शुरू होकर चैत्र माह में एक पखवाड़े तक मनाया जाता है। इसलिए शिग्मो उत्सव को गोवा की लोक आत्मा का उत्सव कहते हैं। क्योंकि इसमें यहां के किसान, मजदूर और ग्रामीण समुदायों की जीवनशैली, उनकी आस्था और उनकी ऐतिहासिक चेतना पूरी भव्यता के साथ अभिव्यक्त होती है। शिग्मो का अर्थ है शिशिरोत्सव अर्थात शीत ऋतु के अंत और वसंत के आगमन का उत्सव। यह पर्व प्राचीन काल से गोवा के कुछ समुदायों द्वारा मनाया जाता रहा है। फसल कटाई के बाद जब किसान अपनी मेहनत के फल से संतुष्ट होते हैं तो प्रकृति और देवताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए शिग्मो उत्सव मनाते हैं।

एक हजार साल पुराना उत्सव

इतिहासकारों के मुताबिक शिग्मो उत्सव मनाने की परंपरा कम से कम 1000 साल पुरानी है। पुर्तगाली शासन के दौरान भी गोवा के स्थानीय लोगों ने इस उत्सव को अपनी सांस्कृतिक पहचान के रूप में बनाए रखा। वास्तव में यह उत्सव गोवा के हिंदू समुदाय के लिए विशेष मायने रखता है। लेकिन इसकी लोक-रंगत और सांस्कृतिक आकर्षण के कारण आज इसमें सभी समुदायों की भागीदारी होती है।

कई लोकनृत्यों का आयोजन

शिग्मो उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें पारंपरिक लोकनृत्य और संगीत के भव्य आयोजन होते हैं। इन नृत्यों में गोवा के ग्रामीण जीवन, युद्ध कथाओं, पौराणिक प्रसंगों और सामाजिक घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। शिग्मो उत्सव में शामिल प्रमुख लोक नृत्यों में घोड़े मोदनी नृत्य सबसे प्रमुख है। वास्तव में यह योद्धाओं का नृत्य होता है। माना जाता है कि प्राचीनकाल में विजयी योद्धा, घोड़ों पर सवार होकर नृत्य किया करते थे। लेकिन आज लोक कलाकार घोड़े की मुखाकृति के मुखौटे पहनकर और हाथ में तलवार लेकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य वास्तव में गोवा के गौरवमयी इतिहास का प्रतीक है। इस उत्सव का दूसरा प्रमुख नृत्य है-रोमातामेल। यह सामूहिक नृत्य है, इसमें कलाकार ढोल, ताशा और झांझ की धुन पर नाचते हैं। इनके अलावा जो प्रमुख नृत्य इस उत्सव में खूब देखने को मिलते हैं, उसे फुगड़ी और जागर नृत्य कहते हैं। ये नृत्य गोवा के ग्रामीण और आदिवासी जीवन को दर्शाते हैं। इन प्रमुख नृत्यों के माध्यम से गोवा में लोग शिग्मोत्सव में सदियों से चली आ रही अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत करते हैं।

निकलती हैं भव्य झांकियां

शिग्मो उत्सव के दौरान गोवा के प्रमुख शहरों जैसे पणजी, मडगांव, वास्को, पोंडा और मापुसा में भव्य शोभा यात्राएं भी निकाली जाती हैं। इन शोभा यात्राओं में रंग-बिरंगी झांकियां होती हैं, जो पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक विषयों को दर्शाती हैं। इन झांकियों में रामायण और महाभारत के दृश्य, गोवा के लोक देवताओं की कथाएं, पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक जागरूकता के संदेश दिए जाते हैं। यह परंपरा आधुनिक, सामाजिक चेतना का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती है।

ग्रामीण और शहरी शिग्मो

ग्रामीण और शहरी शिग्मो उत्सव वैसे एक-दूसरे से थोड़े भिन्न होते हैं, लेकिन ये दो रूप भले अलग हों, लेकिन उनकी आत्माएं एक होती हैं। इन दो अलग-अलग यानी शहरी और ग्रामीण शिग्मो को क्रमशः धाकटो शिग्मो यानी छोटा शिग्मो और व्हाडलो शिग्मो यानी बड़ा शिग्मो कहा जाता है। छोटा शिग्मो ग्रामीण क्षेत्रों में मनाया जाता है, जो ज्यादा पारंपरिक होता है और बड़ा शिग्मो, शहरी क्षेत्रों में आयोजित होता है और इसमें बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक झांकियां और शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं। ग्रामीण शिग्मो में ज्यादा पारंपरिक और धार्मिक तत्व शामिल होते हैं, जबकि शहरी शिग्मो में पर्यटन और बहु-सांस्कृतिकता का प्रदर्शन अधिक होता है, क्योंकि शहरी शिग्मो में बड़े पैमाने पर यहां आने वाले पर्यटक भी हिस्सा लेते हैं।

संस्कृति-संरक्षण का माध्यम

शिग्मो उत्सव केवल एक पारंपरिक लोक त्योहार भर नहीं बल्कि गोवा की सांस्कृतिक धड़कन है। शिग्मो के रंग, संगीत और नृत्य गोवा के लोगों की आत्मा को अभिव्यक्त करते हैं। इसके जरिए पीढ़ियों से चली आ रही लोक परंपराओं को संरक्षण मिलता है। यह विभिन्न समुदायों के बीच एकता और सहयोग की भावना बढ़ाता है। यह महोत्सव युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ता है। आज के आधुनिक और वैश्विक युग में जब कई पारंपरिक उत्सव अपनी पहचान खो रहे हैं, तब शिग्मो उत्सव गोवा की सांस्कृतिक निरंतरता का पर्याय बन गया है। *

क्या आप अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करते हैं, लेकिन इसे प्राप्त नहीं कर पाते? ऐसे में यह जानना बहुत जरूरी है कि किन वजहों से आप अपने लक्ष्य से दूर रह जाते हैं और किन बातों का ध्यान रखकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, जानिए।

आप क्यों रह जाते हैं अपने लक्ष्य से दूर

सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन

कई लोग प्लान बनाते हैं, लक्ष्य भी तय करते हैं, लेकिन उन्हें कभी अचीव ही नहीं कर पाते। हम सभी जानते हैं कि जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी है- लक्ष्य का निर्धारण। लक्ष्य वह मार्गदर्शक है, जो हमें भीड़ में खोने से बचाता है और चुनौतियों से लड़ने का साहस देता है। किसी भी महान कार्य की शुरुआत एक छोटे से संकल्प से ही होती है, जो आगे चलकर एक स्पष्ट लक्ष्य का रूप ले लेता है।

सोचना पर्याप्त नहीं: 'मैं यह करना चाहता हूं' ऐसा सोचकर लक्ष्य बनाना काफी नहीं है। स्पष्टता ही लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता की पहली शर्त है। जब आप गहराई से समझ लेते हैं कि आप कौन हैं, आप वास्तव में क्या चाहते हैं और आपको कहां पहुंचना है, तभी आप एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में दस गुना अधिक व तेज उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं। लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि वह उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है।

स्वयं का करें आकलन: स्वास्थ्य, आनंद, रिश्ते और वित्तीय स्वतंत्रता, ये जीवन के चार स्तंभ हैं, जिन्हें संतुलित करके आप असाधारण सफलता पा सकते हैं। जब आप इन चार क्षेत्रों में से हर एक में खुद को 1 से 10 अंक देकर ईमानदारी से आकलन करते हैं तो आपको तुरंत समझ आने लगता है कि आपके जीवन की सबसे ज्यादा समस्याएं किस क्षेत्र से जुड़ी हैं? जाहिर है, वहीं जहां आपका स्कोर कम होता है। यानी उसी बिंदु पर सबसे अधिक फोकस करने की जरूरत होती है।

अपना दृष्टिकोण तय करें: लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आपकी मानसिकता दो तरह की हो सकती है, समृद्धि का दृष्टिकोण या अभाव का दृष्टिकोण। समृद्धि का दृष्टिकोण आपको आत्मविश्वासी, सकारात्मक और समाधान केंद्रित बनाता है। आप दुनिया को अवसरों से भरा मानते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने का अच्छा समय है। आप में यह जागरूकता बनी रहती है कि दुनिया में चुनौतियां हमेशा थीं, हैं और रहेंगी। मगर आप अपनी ऊर्जा इस बात पर केंद्रित रखते हैं कि क्या बेहतर किया जा सकता है? यह सोच आपको रचनात्मक, सक्रिय और लक्ष्य उन्मुख बनाती है। वास्तव में लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि ऐसा उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है। जब इंसान की आंखों में एक स्पष्ट स्वप्न और उसे पाने का दृढ़ निश्चय होता है, तो वह साधारण से असाधारण बनने का सफर शुरू कर देता है। इसके विपरीत दूसरा दृष्टिकोण आपको सीमित कर देता है। इसमें आप किस्मत के भरोसे बैठ जाते हैं और तरह-तरह के बहाने बनाने लगते हैं। इस दृष्टिकोण से कभी कुछ हासिल नहीं हो पाता है।

लक्ष्य पर शिद्दत से टिके रहें: अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए यह जानना भी जरूरी है कि आप इन्हें क्यों हासिल करना चाहते हैं? अगर यह केवल सतही कारणों से या दूसरों की उम्मीद पर खरा उतरने के लिए है तो आप उसके प्रति गंभीर नहीं हो पाएंगे। इसकी बजाय स्पष्ट रूप से यह जानें कि इन लक्ष्यों का आपके आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन पर क्या असर पड़ने वाला है? इससे आपको अपने लक्ष्य पर टिके रहने का हौसला मिलेगा।

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निर्धारित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें। *

समझ लें सटीक फॉर्मूला

आपके लक्ष्य छोटे हों या बड़े, उनमें सफलता जरूर मिलेगी अगर आप अपने लक्ष्य को निर्धारित करने और उसे पाने का सही फॉर्मूला जान लें। इसके लिए कुछ बातों को समझ लें।

- लक्ष्य की कोई डेडलाइन ना हो तो वह सिर्फ एक कल्पना या सपना मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए हर लक्ष्य की एक समय सीमा तय करें।
- लक्ष्य और समय सीमा तय हो जाए तो वह आपका उद्देश्य बन जाता है। इसे पूरा करने की योजना बनाएं।
- लक्ष्य पाने के लिए आपको निरंतरता का भी ध्यान रखना होगा। यानी आपको नियमित रूप से अपने लक्ष्य को हासिल करने में जुटा रहना पड़ेगा।

आगामी 10 मार्च को सीआईएसएफ का 57वां स्थापना दिवस मनाया जाएगा। देश की महत्वपूर्ण धरोहरों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के योगदान और भूमिका पर एक नजर।

धरोहरों-औद्योगिक प्रतिष्ठानों का रक्षक सीआईएसएफ

जानकारी
अंजू जैन

आजादी के बाद, भारत में तेजी से विकसित हो रहे सरकारी औद्योगिक उपक्रमों को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता थी, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण थे। इसके लिए एक मजबूत सुरक्षाबल की जरूरत महसूस की गई। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए 10 मार्च 1969 को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल यानी सीआईएसएफ (सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स) की स्थापना की गई। भारत की संसद के एक अधिनियम द्वारा इसका गठन किया गया, जो केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है। इस सुरक्षा बल का ध्येय वाक्य है-संरक्षण और सुरक्षा।

प्रमुख कार्य

अपने नाम के मुताबिक ही सीआईएसएफ का प्रमुख आरंभिक कार्य औद्योगिक सुरक्षा ही था। सरकारी कारखानों, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों और बिजली संयंत्रों की सुरक्षा का जिम्मा इस बल को दिया गया। बाद में समय-समय पर इसकी जिम्मेदारियां बढ़ती गईं। आगे चलकर यह अर्धसैन्यबल हवाई अड्डों, बंदरगाहों और मेट्रो की सुरक्षा कार्य भी करने लगा। इस बल के जवान देश की ऐतिहासिक इमारतों, स्मारकों और धरोहरों जैसे-लाल किला, ताजमहल आदि की रक्षा भी करते हैं। वीआईपी सुरक्षा के तहत विशिष्ट व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना भी इनकी जिम्मेदारी में शामिल है।

बढ़ता संख्या बल

जब 1969 में सीआईएसएफ की शुरुआत हुई थी, तब इसमें सिर्फ 2,800 जवान थे। आज यह दुनिया के सबसे बड़े सुरक्षा बलों में से एक है, जिसमें 2,00,000 (दो लाख) से भी ज्यादा जवान शामिल हैं।

आग बुझाने में भी माहिर

सीआईएसएफ के पास अपना एक खास 'फायर विंग' भी है। यह भारत का अकेला ऐसा सुरक्षा बल है, जिसके पास फैक्ट्रियों और उद्योगों में आग बुझाने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित टीम होती है।

स्मार्ट डॉग स्क्वाड

सीआईएसएफ के पास बहुत ही स्मार्ट डॉग्स की तेजतर्रार स्क्वाड भी है। इनके डॉग्स इतने ट्रेंड होते हैं कि वे छिपी हुई खतरनाक चीजों का पलक झपकते ही पता लगा लेते हैं। कई बार सीआईएसएफ के डॉग स्क्वॉड ने शातिर किस्म की साजिशों का भंडाफोड़ किया है।

एयरपोर्ट सुरक्षा में संलग्न

देश के तमाम एयरपोर्ट्स पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल को उनकी विशिष्ट विशेषज्ञता, उन्नत तकनीक के कारण तैनात किया गया है। वे हवाई अड्डे की सुरक्षा के विशेषज्ञ माने जाते हैं, जो यात्रियों की तलाशी, सामान की स्क्रीनिंग और आतंकवाद विरोधी अभियानों में उच्च दक्षता प्रदान करते हैं। इन सैनिकों को विशेष रूप से नागरिक हवाई अड्डों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जो सामान्य पुलिस या दूसरे अर्धसैनिक बलों के प्रशिक्षण से अलग होती है। सन् 1999 में इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट आईसी-814 के अपहरण के बाद, भारत सरकार ने सुरक्षा मजबूत करने के लिए हवाई अड्डों की सुरक्षा सीआईएसएफ को सौंपने का निर्णय लिया। इसकी शुरुआत फरवरी 2000 में जयपुर हवाई अड्डे से की गई। ये अर्धसैनिक, आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके यात्रियों की गहन तलाशी और हैंड बैगेज की जांच सुनिश्चित करते हैं, जो एयरपोर्ट सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। ये अंतरराष्ट्रीय विमानन सुरक्षा मानदंडों का पालन करते हैं, जो अन्य सुरक्षा बलों की तुलना में अधिक उपयुक्त हैं। साथ ही इस बल के जवान संभावित खतरों के लिए 24X7 निगरानी करते हैं और त्वरित प्रतिक्रिया टीम के साथ किसी भी आपात स्थिति से निपटने में सक्षम होते हैं। ये एयरपोर्ट के संवेदनशील क्षेत्रों में असामाजिक तत्वों को पकड़ने और किसी भी प्रकार की तस्करी को रोकने में भी माहिर होते हैं। वर्तमान में 70 से अधिक एयरपोर्ट्स पर सीआईएसएफ के जवानों की तैनाती है। यद्यपि अब देश के लगभग 60 हवाई अड्डों पर गैर-प्रमुख ड्यूटी के लिए निजी सुरक्षा गाड्र्स भी लगाए जा रहे हैं, लेकिन प्रमुख सुरक्षा और स्क्रीनिंग का काम अभी भी मुख्य रूप से सीआईएसएफ ही करती है। *

महिलाएं भी नहीं हैं पीछे

देश के अन्य सुरक्षा बलों पुलिस, पीएसी, बीएसएफ और सशस्त्र सैन्य (थल सेना, वायु सेना और नौसेना) बलों की तरह ही सीआईएसएफ में भी महिलाएं अपनी सेवाएं दे रही हैं। वर्तमान में इस अर्धसैन्य बल में लगभग साढ़े बारह हजार यानी आठ प्रतिशत महिलाएं तैनात हैं। सरकार का लक्ष्य जल्द ही इनकी संख्या बढ़ाकर दस प्रतिशत करने का है। मुख्य तौर पर महिलाएं एविएशन सुरक्षा, क्विक रिएक्शन टीम और सीआईएसएफ कमांडो टीम में शामिल होकर अपनी सेवाएं दे रही हैं। किसी भी अन्य सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्सेस की तुलना में सीआईएसएफ में सबसे अधिक महिलाएं कार्यरत हैं।

स्त्रियों के संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों का विषय बनाया जाता रहा है। आज महिला दिवस के अवसर पर हम आपको कुछ ऐसी फिल्मों के बारे में बता रहे हैं, जिनमें स्त्री संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को प्रमुखता से उभारा गया है।

फिल्मों में खूब दिखीं महिला संघर्ष-शक्ति की कहानियां

सिने ट्रेंड
अशोक जोशी

हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा में स्त्रियों का उल्लेखनीय योगदान रहा। जिन दिनों सिनेमा की शुरुआत हो रही थी, उसमें महिलाओं का काम करना अघोषित रूप से प्रतिबंधित माना जाता था। तब पुरुष कलाकार ही नारी का स्वांग भर पर्दे पर नजर आया करते थे। लेकिन कुछ समय बाद पर्दे पर नायिकाओं के पर्दापण से अब तक स्त्री कलाकार, सिनेमा का सबसे अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं। फिल्मों में समय-समय पर नारी जीवन से जुड़ी समस्याएं, संघर्ष और उनके सशक्तिकरण जैसे विषयों को गंभीरता से प्रदर्शित किया जाता रहा है।

बेमेल विवाह की समस्या: हिंदी सिनेमा में वी. शांताराम, नारी समस्याओं को पर्दे पर सशक्त तरीके से उठाने वाले फिल्मकार थे। उनकी 1937 में प्रदर्शित फिल्म 'दुनिया न माने' बेमेल विवाह की समस्या पर केंद्रित थी। यह फिल्म स्त्रीत्व की गरिमा को बेहद खूबसूरती से उभारती है। शांता आप्टे ने नायिका नीरा की भूमिका में प्राण फूंक दिए थे। नारी को भोग्या, चरणों की दासी और वस्तु मानने वालों को यह फिल्म प्रभावी सबक सिखाती है।

जातिगत विसंगतियों पर कटाक्ष: 1936 में प्रदर्शित फिल्म 'अछूत कन्या' सवर्ण लड़के और अछूत लड़की की एक दारुण प्रेम कहानी है। यह एक दुःखांत फिल्म है। इस वर्जित और उपेक्षित विषय को पहली बार फिल्म के माध्यम से लोगों के बीच लाने का साहसिक प्रयास किया गया था। इससे मिलते-जुलते विषय पर 1959 में विमल राय ने 'सुजाता' बनाई, जो फिर से अछूत युवती और सवर्ण युवक के प्रेम की कहानी है। विमल राय की यह फिल्म आजादी के बाद इस विषय पर बनाई गई पहली फिल्म थी। इस फिल्म के एक दृश्य में रवींद्रनाथ ठाकुर कृत नाटक 'चांडालिका' का मंचन किया जाता है। इस नाटक में भगवान बुद्ध अछूत स्त्री के हाथों से पानी पीते हैं और सभी जातियों की समानता को व्याख्यायित करते है। राजकपूर और मीना कुमारी की ख्वाजा अब्बास निर्देशित फिल्म 'चार दिल चार राहें' की कहानी भी ऐसे ही विषय के इर्द-गिर्द घूमती है। इसी क्रम में श्याम बेनेगल की फिल्में 'अंकुर', 'भुवन शोम', 'मृगया', 'भूमिका', 'मंडी', 'चक्र' आदि में हाशिए पर धकेल दी गई स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की दर्दमय झांकी प्रस्तुत की गई हैं।

दिखे स्त्री संघर्ष के विविध रूप: हिंदी फिल्मकारों ने भारतीय स्त्री के सभी रूपों को अपनी फिल्मों में प्रस्तुत किया है। घरेलू स्त्री, कामकाजी स्त्री, किसान स्त्री, विवाहित और अविवाहित स्त्री, जुझारू स्त्री, संघर्षशील स्त्री और अन्याय, अत्याचार से लड़ने वाली स्त्री के कई रूप हिंदी फिल्मों में नजर आते रहे हैं। महबूब खान द्वारा निर्देशित फिल्म 'औरत' और उसका संशोधित संस्करण 'मदर इंडिया' भारतीय नारी के संघर्ष और त्रासदी की महागाथा है, जिसमें ग्रामीण महाजनी सभ्यता की क्रूरता और अत्याचार से लड़ती हुई नारी की मार्मिक कहानी है। ग्रामीण सामंती अत्याचार से उत्पन्न डाकू समस्या को उजागर करने वाली फिल्मों में नारी की विवशता को 'मुझे जीने दो', 'गंगा जमुना', 'जिस देश में गंगा बहती है' और शेखर कपूर की 'बैंडिट क्वीन' में प्रभावी ढंग से पर्दे पर उतारा गया है।

राजकुमार संतोषी की फिल्म 'लज्जा' में समाज के अलग-अलग परिवेशों से आने वाली तीन स्त्री पात्रों के दारुण शोषण और मुक्ति के संघर्ष को दर्शाया गया है। इनकी ही फिल्म 'दामिनी' में बलात्कार से पीड़ित घर की एक नौकरानी को न्याय दिलाने की कहानी को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया गया है।

आर.के. बैनर की फिल्मों में स्त्री: राजकपूर द्वारा निर्मित-निर्देशित फिल्मों में भी स्त्री जीवन और संघर्ष के विविध रूप सामने आते हैं। 'सत्यम शिवम सुंदरम', 'राम तेरी गंगा मैली' जैसी फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दास्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करवाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।

बी.आर. चोपड़ा की फिल्मों में स्त्री संघर्ष: फिल्मों में नारी की स्थिति का चित्रण करने में बी. आर. चोपड़ा का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। 1956 में उन्होंने फिल्म 'एक ही रास्ता' में विधवा विवाह करवाकर सामाजिक सुधार का संदेश दिया। 'साधना' (1958) समाज में वेश्याओं की स्थिति और उसके प्रति सामाजिक नजरिए पर प्रकाश डालने में सफल रही। साल 1959 में उन्होंने अविवाहित मातृत्व की समस्या से जूझने वाली स्त्रियों के जीवन के बिखराव और उसकी परिणति को दर्शाने वाली सशक्त फिल्म 'धूल का फूल' का निर्माण किया। 'इंसाफ का तराजू' (1980) में बलात्कार से पीड़ित लड़की की कहानी को साहसिक रूप से प्रस्तुत किया। 1982 में फिल्म 'निकाह' में उन्होंने तलाक और हलाला जैसे विषयों को छूने का प्रयास किया।

नारी संघर्ष की दास्तान सुनाती कुछ और फिल्में: बॉलीवुड में स्त्रियों के संघर्ष और नारी सशक्तिकरण पर तमाम बेहतरीन फिल्में बनी हैं। 'खून भरी मांग', 'मृत्युदंड', 'वारिस', 'थप्पड़', 'कहानी', 'लापता लेडीज', 'गंगूबाई काठियावाड़ी', 'नीरजा', 'क्वीन', 'गुलाब गैंग', 'इंग्लिश-विंग्लिश', 'पिंक', 'दंगल', 'छपाक', 'मर्दानी', 'गुंजन सक्सेना' जैसी कितनी ही फिल्में हैं, जो स्त्री संघर्ष, स्त्री सशक्तिकरण सहित स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को छूती हैं। *